तेरी सों मैया सुनमोसों नेक छुवत उठ आयोजी ॥ १ ॥
अब पूजो बहुरो गिरिराई सबसों कहत कन्हाईजी ॥
बूडतते ब्रजराखि लियो गिरि कीनी बहुत सहाईजी ॥
बहुरोगिरि पूज्यो ब्रजवासिन अति मनहरष बढाईजी ॥
दिये दान बहु विप्रबुलाई अतिहरषित नँदराईजी ॥ २ ॥

दोहा—पान मिठाई दूध दधि, रोरी सुमननहार ॥
रोहिणिअरु यशुमतिमहरि, सजिसजिल्याईथार ॥

चौबोला—सजिसजिल्याई थारहरीके तिलककियोमहतारीजी ॥
पुलकि प्रेम परिपूरण गाता अति मन आनँद भारीजी ॥
बहुतक द्रव्य नौछावरकीनों उरलाये सुखकारीजी ॥
ब्रजतिय हरिके तिलक लगावैं फूलमाल गरडारीजी ॥ १ ॥
सुमनहार हरिको पहरावहिं इहि मिस अंग छुवावैजी ॥
निरखिवदन छबि विधिहि मनावैं ब्रज तिययहमनचावैजी ॥
होय हमारो पति गिरिधारी मन मोहन मन भावैजी ॥
निशि दिन ध्यान धरत ब्रज वनिता औरन आन उपावैजी॥२॥

दोहा—यहै कामना सबनमन, होय पती नँदलाल ॥
निरखि वदन छबि श्यामकी, अति प्रसन्न ब्रजबाल ॥

चौबोला—अति प्रसन्न ब्रजबाल कह्योतब नंद सों कुँवरकन्हाईजी
सुनहुतात अब बात हमारी विनवहु श्री गिरिराईजी ॥
चलिये अब सब निज निज धामा यह सुनि सब शिरनाईजी ॥
चले ब्रजहिमन हरष बढ़ाई घर आये समुदाईजी ॥ १ ॥
ब्रज घर घर आनंद भये सब गावति मंगलचारीजी ॥
आये सुरपतिजीत हरिः ब्रज श्री गिरिधर बनवारीजी ॥
ब्रज मंगल ब्रज मोद सुखद ब्रज आभूषण गिरिधारीजी ॥
नितनव करत विनोद ब्रजहि हरि विहारन जन हितकारीजी२

अथ नंद एकादशी वरुण लीला ।

दोहा—इन्द्रजीत आये घरहि, हलधर नन्द कुमार ॥
मुदित गोप आनंद मन, घर घर मंगलचार ॥
चौबोला—घरघरमंगलचारताहिदिन तिहिदशमी शुभकारीजी॥
कातिक शुधि एकादशि आई मन वांछित फल कारीजी ॥
भक्ति मुक्तिदायक अति पावन पाप नशावन हारीजी ॥
नन्द एकादशि व्रत प्रतिपाले विधिवत धर्म सँभारीजी ॥ १ ॥
प्रथमहिं दशमी संयम कीनो भोर एकादशि आईजी ॥
निराहार निर्जल दृढनेमा कियो वर्त नँदराईजी ॥
भजन करत सब दिवस बितायो और न कछु मन लाईजी ॥
निशि जागरण करन विधि मानी प्रभु मंदिरमें जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—विविध सुगंध सिचाय जहँ, पाटम्बर बिछवाय ॥
बांधी बंदनवार तहँ, सुमनमाल लटकाय ॥
चौबोला—सुमनमाल लटकाय चौकचौरु१बहु रंग सुहायाजी ॥
सिंहासन जहँ राख्यो रूरो२ प्रेम सहित नँदरायाजी ॥
शालिगराम तहाँ पधराये भूषण वसन सजायाजी ॥
धूप दीप नैवेद्यकरी अरु प्रभुपर पुहुप चढ़ायाजी ॥ १ ॥
करी आरती अतिहि प्रेमसों घंटा शंख बजाईजी ॥
प्रभुपद नायो माथ प्रदक्षिणा३ करी चार नँदराईजी ॥
तुम त्रिभुवनके नाथ जोरकर स्तुति प्रभुहि सुनाईजी ॥
आदर सहितकरी नंद पूजा प्रेम भक्ति उरमाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तीन याँम४ यामिनि५गई, करयो भजन मन लाय ॥
यशुदहि नंद बुलाय तब, कह्यो वचन समुझाय ॥
चौबोला—कह्यो वचन समुझाय द्वादशी एकहि दण्ड बताईजी ॥

१ पवित्र । २ सुन्दर । ३ फेरा । ४ पहर । ५ राति ।

तुम पारन विधि करहु सवाँरी मैं जावत न्हाआईजी ॥
ले झारी धोती करमाहीं चले न्हान नंदराईजी ॥
गये नंद यमुनाके तीरा संग तहां कोउ नाईजी ॥ १ ॥
भरि झारी यमुना जललीनो देह कृत्य कियो जाईजी ॥
ले माटी कर चरण पखारे धोयो मुख नँदराईजी ॥
अचमन ले बैठे नँदपानी वरुण दूत गहि बाईजी ॥
नंदहि लेगये पकरि पताला दियो वरुणके पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जान्यो ताता कृष्णको, मगनभयो ज़लराय ॥
अंतर्यामी श्याम घन, नन्दलेन अब आय ॥

चौ०-नंद लेन अब आय हरष अति प्रेम पुलकि सुख मानेजी ॥
नन्दहि ल्याये दूत हमारे भली भई इन आनेजी ॥
निगम नेति श्रुति जिहि नित गावैं जाहि धरत मुनि ध्यानेजी ॥
ऐहैं सोप्रभु कृपानिधाना धनि धनि भाग्य बखानेजी ॥ १ ॥
हर्ष सहित नंदहि जलराया महलन भीतर ल्यायेजी ॥
धीरजदे राखे नँदनीके सादर वचन सुनायेजी ॥
रानिन सहित नंदको देख्यो जन्म सफल करपायेजी ॥
कहतकि धनि धनि भाग्य हमारे नंद हमारे आयेजी ॥ २ ॥

दोहा–जिनके सुत त्रैलोक्य धनि, सुर नर मुनि सुखदाय ॥
करुणामय आवत अबै, जोवत मग जलराय ॥

चौबोला-जोवत मग जलराय सोच उत यशुमतिके उर छायेजी ॥
भई वेर आये नँद नाहीं आजु कहां बिलमायेजी ॥
खबर लेन जब ग्वाल पठाये यमुना तट नाहिं पायेजी ॥
झारी धोती तटपर देखी ग्वाल मनहिं घबरायेजी ॥ १ ॥
इत उत खोज ग्वाल फिर आये कह्यो महरिसों आईजी ॥
झारी धोती तटपर पाई सुनत महर मुरझाईजी ॥

निसा अकेले आज सिधाये लीने जलचर खाईजी॥
अति व्याकुल यशुमति भय पाई रोयउठी अकुलाईजी॥२॥
दोहा–सुनि धाये ब्रज लोग सब, नंदहि खोजत जाय॥
नन्द नन्द टेरत सबै; नाहिं पावत नँदराय॥
चौबोला–नहिं पावत नँदराय ढूंढि रहे ब्रजवासी समुदायेजी॥
बन घन यमुना तट सब देख्यो नन्द नहीं कहुँ पायेजी॥
सोवत ते हरि हलधर भाई दोउ जननी ढिग आयेजी॥
रोवत मात देखि दुख पाये पूछत अति अकुलायेजी॥१॥
कत रोवतरी यशुमति मैया पूँछत हैं दोउ भाईजी॥
यमुना तट कहुँ नंदहिराये कहति यशोमति माईजी॥
यह सुनि हरि बोले सुन माता आवत हैं नँदराईजी॥
मत रोवे मैं जात बुलावन अबहीं ल्यावत जाईजी॥२॥
दोहा–सकल लोक व्यापक हरिः, अंतर्यामी नाम॥
वरुण प्रीति प्रभु जानिमन, नन्द लेन गये श्याम॥
चौबो०-नन्द लेन गये श्याम वरुणके लोकहिं तुरत सिधायेजी॥
सुनत वरुण आतुर उठधायो कहत धन्य हरिं आयेजी॥
देखत दरश परमसुख पायो चरणन शीश नवायेजी॥
त्रिभुवनपति मम धाम सिधाये अति आनँद हरषायेजी॥१॥
महलन बंदनवार बँधाई पाटम्बर बिछवायेजी॥
रत्न जटित सिंहासन धार्यो तापर हरि बैठायेजी॥
धोवत पद प्रभुके जलराया निजकर प्रीति बढ़ायेजी॥
जेपद रहत रमाउर धारे ते पद जल पतियायेजी॥२॥
दोहा–विविध भांति प्रभु पूजिके, वरुण कह्यो शिरनाय॥
कृपासिंधु अति कृपा करि, दियो दरश मोहिंआय॥
चौबो-दियो दरश मोहिं आय कियोमैं दोष सो उर जिनआनोजी

क्षमा समुद्र अगाध करो क्षमा निज जन अपनो मानोजी ॥
जल रक्षक जे दूत कृपाला जिनहिं नन्द गहि आनोजी ॥
ये कारजमैं उनको दीनो तिन्हैं नन्द नहिं जानोजी ॥ १ ॥
वेहैं सकल दंड अधिकारी कियो पाप उनभारीजी ॥
भाये वे मेरे मन जाते दियो दरश बनवारीजी ॥
देखिनाथ शुभ दरश तुम्हारो मैं मान्यो उपकारीजी ॥
अब प्रभु हम सब शरण तुम्हारी राखि लेहु गिरिधारीजी ॥२॥
दोहा–परीं चरण रानी सकल, बडभागिन मन जान ॥
बरुण सहित अनुराग मन, स्तुति करत बखान ॥
चौ०-स्तुति करत बखान धन्य नंद धनि यशुमाति महतारीजी ॥
धनि धनि तुमहिं खिलावत गोदै बड़भागिन अति भारीजी ॥
पूरण ब्रह्म जहां अवतारी धनि ब्रजके नर नारीजी ॥
गुणातीत[2] अविगति अविनाशी[3] विहरत ब्रज सुखकारीजी ॥१॥
शेष सहसमुख वर्णतजाई शिव ब्रह्मा रटलायाजी ॥
रानिन सहित करी स्तुती पुनि पुनि शीशनवायाजी ॥
नंदके ढिंगले गयो लिवाई प्रभुको जब जलराईजी ॥
शशि मुख देखि श्यामको तबहीं नंद महर हरषायाजी ॥ २ ॥
दोहा–रहे मुदित चक्रत चितै, लखि प्रभुकी प्रभुताय ॥
भयो आय अवतार यह, कहत मनहिं नँदराय ॥
चौबोला–कहत मनहिं नंदराय मनहिं मन मगन भये नँदराईजी
ब्रह्म करत मोसदन विहारा आनँद उर न समाईजी ॥
वरुणहिं दै जलराय बडाई हरिजनके सुखदाईजी ॥
चलहु तात ब्रजकहि हँसि दीने करगहि कुँवर कन्हाईजी ॥१॥
करयो प्रणाम वरुण सुखपाई नन्द श्याम ब्रज आयेजी ॥

१ प्रीति। २ गुणोंसेपरे। ३ नाशरहित।

नन्द आय ब्रजको जब देख्यो तब सब स्वप्न लखायेजी ॥
देखि नन्दको ब्रज नर नारी गयो दुःख सुख पायेजी ॥
बूझत नन्दहिगोप सयाने कितहि गये नाहिं आयेजी ॥ २ ॥
दोहा–थके खोज ब्रजलोग सब, तुमबिनभये बेहाल ॥
नन्द कह्यो एकादशी, कियो वर्त मैं काल ॥
चौबोला–कियो वर्तमैं काल्ह आज यह द्वादशि थोरीआईजी ॥
रैनि अछत गयो यमुना न्हानें कटिलों जलके माईंजी ॥
ले गये वरुण लोकको मोहीं वरुण दूत गहिबाईजी ॥
ल्याये मोहिं गुपाल छुड़ाई वरुण लोकते जाईजी ॥ १ ॥
ये कोउ उत्तम पुरुष विसाला प्रगटे ब्रजके माईंजी ॥
कोटि भांति वरणी जलराई महिमा कहिय न जाईजी ॥
इनको तुम सब नर मति जानो सांच कहत मैं भाईजी ॥
भयो अधीन बहुत जलराई परचो चरणमें आईजी ॥ २ ॥
दोहा–पूजे पद रानिन सहित, जानि जगतपतिईश ॥
पुनि पुनि विनय सुनाय सब, धरे चरणमें शीश ॥
चौबोला–धरे चरणमें शीश सुनत सब नर नारी सुखमानीजी॥
कहत भये हम सकल सनाथा हरिकी महिमा जानीजी ॥
यशुमति सुनत चकित नँदबानी क़हत ये अकथ कहानीजी ॥
कहत नंद सों यशुदा रानी हरि माया अरुझांनीजी ॥ १ ॥
मोवरजत निशिन्हान सिधाये भयो कोउ पुण्यसहाईजी ॥
ल्याये नन्दहि खोज कन्हाई लिये श्याम उरलाईंजी ॥
विप्रन बोल दियो बहुदाना बाँटे पान मिठाईजी ॥
बाजी नन्द अबास बधाई गावाति नारि सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–विविध बधाई नन्दघर, गावत मंगलचार ॥
ध्वज पताक तोरन कलस, बांधी बंदनवार ॥

चौबोला-बांधी बंदनवार देखि नंद यशुदहि कहत बुलाईजी ॥
तूकत करत बधाई भोरी जिनके सहाय कन्हाईजी ॥
जाको त्रिभुवन पतिसों ताता मंगल ताहि सदाईजी ॥
कही गर्ग मुनि वाणी जोई सोइ सोइ प्रगट लखाईजी ॥ १ ॥
इनते समरथ और न कोई ये सब सुखके राजाजी ॥
विहारन सब आनन्द मगन मन राखत हरिकी आशाजी ॥
धन्य धन्य नर नारि कहत सब अति मन परम हुलासाजी ॥
श्री वैकुंठ निवासि हरी सों हम सँग करत विलासाजी ॥ २ ॥

अथ वैकुंठदर्शन लीला।

दोहा-कहत सकल ब्रजलोग यह, करमन परमहुलास ॥
कैसो है वैकुंठसो, जहँ हरि करत निवास ॥
चौबोला-जहँ हरि करत निवास तहाँ कछु जन्ममरणभयनाईजी
जाको वेद पुराण बखाने जहँ हरि रहत सदाईजी ॥
जो हरि हमहिं दिखावे सोई तो बड़भाग्य कहाईजी ॥
यह मनसा सबके मन आई जानलई सुखदाईजी ॥ १ ॥
तबहिं कृपा करि सब ब्रजलोका वैकुंठहि पहुँचायेजी ॥
धर्म धाम जो वेदन गायो दिव्य दृष्टि दिखरायेजी ॥
पुर वैकुंठ अनूप विसाला देखत ग्वाल भुलायेजी ॥
भूमि वज्रमणि द्युति छविछाई परम प्रकाश सुहायेजी ॥ २ ॥
दोहा-वापी कूप तडाग तट, विविध नगन बँधवाय ॥
रत्न जटित सोभासरस, रहत हैं देवलुभाय ॥
चौबोला-रहत हैं देवलुभाय फूले बहु रंग कमल भरिभाराजी॥
करत शब्द खग गुंजत भृंगा रहत सकल सुखसाराजी ॥
कल्पवृक्षके बाग वनहिं जहां सुमन सुगंध अपाराजी ॥

खँग मृँग जे सब तहां निवासी दिव्यस्वरूप उदाराजी ॥ १ ॥
चिंतामणि मय खचित सकल जहां मंदिर वरणि न जाईजी ॥
जैसी जाकी मनो भावना तैसो ताहि लखाईजी ॥
सकल चतुर्भुज जहँके स्वामी शुद्ध सतोगुण ताईजी ॥
रमा सहित प्रभु तहां निवासी राजत हरि सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अविनाशी सुन्दर सुखद, भूषण वसन अपार ॥
वदन प्रकाश सुहावने, कोटि चंद्र बलिहार ॥

चौबो०-कोटि चंद्र बलिहार जटित मणिशीश मुकुट छबिछाईजी
भूषण वसन अनूपम राजत छबि बरणी नहिं जाईजी ॥
दिव्यपारषद चमर ढुरावैं देखत ग्वाल लुभाईजी ॥
जान्यो प्रभु प्रतापतिहिंकाला लँखि प्रभुकी प्रभुताईजी ॥ १ ॥
शंख चक्र गदा अंबुँज धारे चारहि भुजा सुहाईजी ॥
दुइ भुज हरिको रूप नहीं अरु लकुट मुरलि करमाईजी ॥
गुंजहार कटिकाछनि नाहीं मोरपंख शिरनाईजी ॥
नहीं भेष नटवर गोपाला ग्वालन विस्मय आईजी ॥ २ ॥

दोहा—सोई रूप उपासना, विन देखे नँदलाल ॥
अकुलाने दृंग सबनके, देखनको तिहिंकाल ॥

चौ०—देखनको तिहिंकाल सबनमन मुरलीधर ब्रजकान्हाजी ॥
नटवर भेष गुपाल सोई सब ब्रजवासिनके ध्यानाजी ॥
यदपि उपासन रूप यह है अमित रूप भगवानाजी ॥
विरह विवस हरि ब्रजजन जाने तुरत सबन ब्रज आनाजी ॥ १ ॥
रहे चकित शशि वदन निहारी देखि श्याम सुख पायोजी ॥
कहां गये हम कैसे आये सब मन अचरज आयोजी ॥
कहत परस्पर सब ब्रजवासी स्वप्न समान लखायोजी ॥

१ पक्षी। २ हरिण। ३ देख। ४ कमल। ५ आंखैं।

यह चरित्र सब मोहन करहीं पुर वैकुंठ दिखायोजी॥ २॥
दोहा–विलसत हमरे ब्रह्म संग, कहत गोप सुखपाय॥
धनि धनि हमरे भाग्य कहि, प्रभु पद परसत धाय॥
चौबोला–प्रभुपद परसतधाय हँसत हरि सब सों कहत कन्हाईजी
रहे कहा तुम सकल भुलाई लख्यो कहा कहुँ जाईजी॥
आज कहा देख्यो नँदलाला सो सब कहत सुनाईजी॥
भूतल नाग पताल तिहारो देतहो तुमहिं दिखाईजी॥ १॥
यह सुनि श्याम मंद मुसकाई दीने मोह भुलाईजी॥
करत चरित विचित्र प्रभू सब ब्रजवासिनके माईजी॥
लखि लखि शिव ब्रह्मादिक सुर मुनि निज निज मनहिं सिहाईजी।
अति आनंद ब्रजलोग हरीके लखत चरित सुखदाईजी॥ २॥
दोहा–सबको सब सुख योगहै, विहारन नन्दकुमार॥
सदा श्याम भक्तन सुखद, भक्तनहित अवतार॥
चौबोला–भक्तनहित अवतार संकटमें जहँ जब जन दुखपावैजी॥
तहां प्रगट तिनको निस्तारे वेद सकल यह गावैजी॥
दुख भीतर जो सुमिरन करहीं जिनको दरश दिखावैजी॥
दुख सुखमें वाईको ध्यावे तिनहि न हारि विसरावैजी॥ १॥
देव दनुज खग मृग नर नारी भक्त विवस सुखदाईजी॥
चितदे भजे भाव जो जैसे तैसेहि ताहि लखाईजी॥
ब्रह्मा आदि कीटके माही हरि जल थल सब ठाईजी॥
वेद पुराण साखि सब बोले भाव विवस सँग धाईजी॥ २॥

अथ दानलीला॥

दोहा–काम भाव ब्रज गोपिकन, ध्यायो नंदकुमार॥
मन वच क्रम हरि सों लगी, लोक लाज दैडार॥

चौबोला–लोकलाज देडार एकक्षण हरिको बिसरत नाईजी ॥
भवन काज चित हरिपैवारे निशिदिन ध्यान कन्हाईजी ॥
गोरसलै निकसैं ब्रजमाहीं जितहि श्याम तित जाईजी ॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी रीझे जन सुखदाईजी ॥ १ ॥
नवसत साज शृंगार किये तनु गोरसले ब्रजनारीजी ॥
बेचहिं दधि इहि मगनित आवें मोसों प्रीति अपारीजी ॥
करौं दान दधिकी यह लीला अब इन संग बिहारीजी ॥
हरि ब्रज मोहन नंद लाडिले यह मन माहिं विचारीजी ॥ २ ॥
दोहा–दानी नाम धराय निज, युवतिन सुख उपजाय ॥
रचि इक लीला दानकी, भक्तनकी सुखदाय ॥
चौबोला–भक्तनकी सुखदाय रचौ अब लीला परम सुहाईजी ॥
श्याम सखन तब लिये बुलाई कहत सबन समुझाईजी ॥
ब्रज युवती नित गोरस ल्यावैं या मारग ह्वै जाईजी ॥
गोरस खाय जान तब दीजै तिनको लेहु खिजाईजी ॥ १ ॥
यह सुनि सखा उठे हरषाई भलि यह बात सिखाईजी ॥
कहत श्याम दधि दान लगायो हँसत सखा समुदाईजी ॥
आवति नित ग्वालिनि इहि बाटा घेरहु ग्वालन जाईजी ॥
रहो तरुनकी ओट लुकाई कह्यो श्याम समुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–दधिले आवति ग्वालिनी, जान नहीं कोउ पाय ॥
घेरचो मग बैठे सखा, ठगको ठाँव बनाय ॥
चौबोला–ठगको ठाँव बनाय सखा सब बैठे बनके माईजी ॥
उतते बनि बनिं ग्वालि नवेली दधि बेचनको आईजी ॥
हँसत परस्पर आपुसमाई चलीं सकल हरषाईजी ॥
घेर लई चहुँ ओर सखन तब सब मन मांझ डराईजी ॥ १ ॥
चकित रहीं चहुँओर निहारी देखि अचानक भीराजी ॥

कितते आये यह सब ग्वाला सरमीं कछुक शरीराजी ॥
संकित ह्वै ठाढी भईं ग्वालिन लिखि मनु चित्र चतीराजी ॥
कछू बदनते वचन न बोले हाथ पाँय भये धीराजी ॥ २ ॥
दोहा—हँसि ग्वालन कह्यो मति डरो, जिन कहुँ जावहु भाज॥
इहां चोर ठग कछु नहीं, अभय कान्हको राज ॥
चौ०-अभय कान्हको राज आवत मग मति डरपो वनमाईजी ॥
दधिको दान लगत सो दीजै बहुरि सकल घर जाईजी ॥
नाम कान्हको जब सुन पायो युवती सब हरषाईजी ॥
बोलीं हँसि तव सब ब्रजबाला कहांप्रभु कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
चोरीं करि नहिं पेट अघायो दानकि रीत चलाईजी ॥
तब अति बालक हते कन्हाई सही जो कारि लरिकाईजी ॥
होहु जो कछु वा धोखे माई परिहै समुझ क्षण माईजी ॥
प्रगटभये तव कुँवर कन्हाई बोले हरि मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तबतो हम लरिका हुते, सही बात अनजान ॥
सोधोखे अब मेटिकै, छाँड़िदेहु अभिमान ॥
चौबोला—छाँडिदेहु अभिमान माँगत हम दान देतहो नाईजी ॥
कहत नन्दकी आनकिये मैं बिन दिये जान न पाईजी ॥
तब बोलीं ग्वालिन मुसकाई तुम डरतजी ढिठाईजी ॥
नंदहुते कछु तुम्हें कन्हाई भयो जु तप अधिकाईजी ॥ १ ॥
कालहि चोर चोर दधि खाते धरन लगी भजे जाईजी ॥
रातहि भयो स्वप्न कछु आई प्रातहि भईं ठकुराईजी ॥
भली कही नहिं ग्वालिन वाणी तुम यह बात न पाईजी ॥
पिता रचित धन धाम जुहोई पुत्र काज सो आईजी ॥ २ ॥
दोहा—तुमसी प्रजा बसाय हम, ठाकुर क्यों न कहाय ॥
कहहु कान्ह बातें सँभारि, कहति ग्वालि झहराय ॥

चौबोला—कहति ग्वालि इहराय ऐसेको बसहीं छांह तिहारीजी॥
कंस नृपतिके सब कहलावैं बसैं इक गाँव मझारीजी॥
जो तुम याहीते गरभाने तजिहैं गांव सवारीजी॥
यह सुनि हाँसि बोले बनवारी कहा कहत यह ग्वारीजी॥ १॥
गांव हमारो छांड़ि ग्वालनी बसिहौ कापुर माईजी॥
ऐसोको तिहुँलोकहि माई सो मेरे वश नाईजी॥
कहा गनती में कंस बिचारो जाके हम कहवाईजी॥
रार बढावतिहो विन काजे दानदेतहो नाईजी॥ २॥

दोहा—बड़ी बात छोटे वदन, सँभारि कहो नँदलाल॥
तीन लोक अरु कंस वश, कियो तुमाहिं किहि काल॥

चौ०-कियो तुमहिं किहि काल यह तुम बात कह्यो तिनमाईजी॥
जो कोउ तुमको जानत नाई कहो तिन्हें तुम जाईजी॥
हम इन बातन भयनाहिं मानें जानत तुमाहिं कन्हाईजी॥
हमसों लीजो दान सवाई थैली लेहु मँगाईजी॥ १॥
पीताम्बर बोझन फटजैहै तब पाछे पछिताईजी॥
ऐसे कहि ग्वालनि मुसकाई तब बोले सुखदाईजी॥
तू ग्वालिन हमको कहा जानै झूँठ कहत हम नाईजी॥
झूँठीहो तुमहीं सब ग्वालिन बिनहीं काज रिसाईजी॥ २॥

दोहा—कह्यो हमारो मान ल्यो, लेखो करद्यो दान॥
छोरलेहुँ दधि नंद सौं, तुम्हें देहुँ नाहिं जान॥

चौ०—तुम्हें देहुँ नहिं जान सुनत सब बोलीं ग्वालि रिसाईजी॥
काहेको इठलात कन्हाई छांड़ि देहु लरिकाईजी॥
चलहु कान्ह पहली परपाटी कहा नइ रीत चलाईजी॥
जानि पाय है कंस भुवाला पुनि परिहै कठिनाईजी॥ १॥
बीतन लाग्यो याम युगाहिं अब हँसी घरी द्वै चारीजी॥

बाढि जाय यह बात सकल ब्रज वन में रोकी नारीजी ॥
कहा कंस कहि मोहिं सुनायो जावहु वेग पुकारीजी ॥
मेरी लरिकाई नहिं जानत लरिका कहत हो ग्वारीजी ॥ २ ॥

दोहा–स्वर्ग पठाई पूतना, तृणावर्त महिडार ॥
वत्सा वका अघाहने, करपर गिरिवर धार ॥

चौबोला–करपर गिरिवर धार ऐसी है यह मेरी लरिकाईजी ॥
जान बूझ तुम देत भुलाई तुम कहा जानति नाईजी ॥
देत दिवावत हो तुम गारी हँसी करत तुम आईजी ॥
आपहि बैठी हो वनमाई बात जान मन भाईजी ॥ १ ॥
चोरी सदा बेच दधि जावो दान देत हो नाईजी ॥
सबदिवसनको लेहुँ चुकाई आज पकरि मैं पाईजी ॥
बधे असुर सो सुनी बडाई कीनी भली कन्हाईजी ॥
गिरि धारचो बलखाय हमारे बात तुम्हारी पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मांगि लेहु दधि खाउसो, दान सुनत उठे दाह ॥
हमें कहत हो चोरटी, आप भये हो साह ॥

चौ०–आप भये हो साह बड़े भये चोरी करत कन्हाईजी ॥
हमको होत अवार लेहु दधि हम तुम्हरी बलि जाईजी ॥
लिये दानको नाम कन्हाई बूंद न पैहो राईजी ॥
यह तुम मोको कहा सुनाई गोरस लेहुँ छिनाईजी ॥ १ ॥
जोबनरूप अंग जो तुमरो सो तुम काय छिपावोजी ॥
कंचनभार युवति तुम सगरी या मारग नित आवोजी ॥
दही मही मोको दिखरावो जोबन क्यों न बतावोजी ॥
अंग अंगको दान गिनावो लेखो करहिं चुकावोजी ॥ २ ॥

दोहा–तुम ऐसे दानी भये, कहति ग्वालि झहराय ॥
दान चुकावंत अंगको, रूपहिं दीठ लगा[illegible]

चौबोला—रूपहिं दीठ लगाय जान परी अब प्रगटी तरुणाईजी॥
यशुमति सों हम कहिहैं जाई कान्हहिं ज्वानी आईजी॥
उर आनँद ऊपर रिस करिकै मटकी शीश उठाईजी॥
तब हरि पीताम्बर कटि कसिकै अंचलपट धरचो जाईजी॥१॥
रिस करि मटुकी लई छिनाई गोरस दियो लुटाईजी॥
गेहि गहि भुजा सबन झककोरी नोगरि तोर बगाईजी॥
कहत कह्यो मानत हो नाहीं ढीठ भई हो आईजी॥
दान देत झगरो हठि ठानत जोबन जोर दिखाईजी॥२॥

दोहा—जननी नहीं पत्याय है, आवोगी पछिताय॥
निबहोगी पुनि काल्ह किम, जो कहिहो घरजाय॥

चौबोला—जो कहि हौ घरजाय कहत हो फारे बसन कन्हाईजी॥
भये श्याम तुम निपट दुलारे बोलत हो मन आईजी॥
तापर मांगत जोबन दाना कहुँ कानन सुनि नाईजी॥
दधि माखन सब लियो छिनाई कहिहैं यशोदहि जाईजी॥१॥
यह कहि ग्वालिन चली रिसाई अबहीं पकरि मँगावेजी॥
गई उरहनो ले सब गोरी हरि मन मन मुसकावेजी॥
कहा महिर सुतको सिखरायो यशुदहिं जाय सुनावेजी॥
रोकत युवतिनको बनमाहीं जोवन दान चुकावेजी॥२॥

दोहा—गहिगहि आंचर पटझटक, तोरे भूषण कान्ह॥
दधि माखन सब लूटिकै, मांगत जोबन दान॥

चौबोला—माँगत जोबन दान ऐसोको भयो महर कुल माईजी॥
जोबन दान लेत है अरिकै प्रगटे पूत कन्हाईजी॥
कहां लगि पीपर बनदे दाहिन नित उठ सहिय न जाईजी॥
कैसे गोरस बेचन जावें हरि पै जान न पाईजी॥१॥

---

१ जवानी। २ पकड़ पकड़। ३ दूध, दधि।

सुनत वचन ग्वालिनके मुखके बोली यशुमति मातैजी॥
मैं जानी तुमरे सब मनकी उर अंतरकी बातैजी॥
कहति श्याम अब ढीठ भयो है आप फिरत इतरातैजी॥
उरहनको दौरीं सब डोलत उरलगाय नख घातैजी॥ २॥

लावनी।

दशहिं वरसको कुँवर कन्हैया तुम जोवन तरुणाई हो॥
दोष लगावै श्यामको देन उरहनो आई हो॥
टेक–दोष लगावति श्यामहिं आई कैसे कहि आवत बानी॥
लाज न आवे हरिपर फिरत सबै तुम मडरानी॥
जाहु सबै बैठो घरमाहीं फिरत कहा हो इठलानी॥
सब मैं जानी करत हो तुम सब मिल आना कानी॥
अहो महरि ऐसो नहिं कीजै तुम उलटी रिसहाईहो॥
दोषलगावै० ॥ १॥

सुत वैसो मग चलन न देही लूटलेत है वरजोरी॥
खीजकरत हो यशोमति तुम अपने सुतकी चोरी॥
तजि हैं आजहि गाँव तिहारो ऐसे ब्रज बसियेकोरी॥
बहुरि न सुनियो हमारो नाम महिर या ब्रजतोरी॥
ऐसे कहा कहत डर पाई बसत नहीं कहुँ जाई हो॥
दोषलगावै० ॥ २॥

मेरो कहा कछू घटजैहै झूंठी बात सहैंकारी॥
कोपतियावै बात यह झूंठ कहत तुम मिलसारी॥
तुमबांधति आकाशहि जोवन सबहिनआवत दिनचारी॥
कराहिं न ऐसी हरी यह वृथा बढावति हो रारी॥
हम झूंठी नहिं भाषत यशुमति तुम मानत क्योंनाईहो॥
दोषलगावै० ॥ ३॥

जो तुम हम न पत्याय यशोदा बूझदेखि अंतहिजाई ॥
कहा बड़ाई तेरे लालाकी सब ब्रजमें छाई ॥
हठ कर टेक आपनी ठानों सुतकर मन जानति नाई ॥
दशगायनकी कहा बड़ाई अहिर जात एकहि माई ॥
विहारनसखी कहत यशुमति सों बरजत नाहिंकन्हाईहो ॥
दोषलगावै० ॥ ४ ॥

दोहा—महाढीठमानत नहीं, बन कुंजनमें जाय ॥
सखा संगले साँवरो, झगरत मगमें आय ॥

चौबोला—झगरत मगमें आय नेकहू मानत संका नाईजी ॥
सोइ करत जो कछु मनमानें हरिते नाहिं वसाईजी ॥
यह सुनि कहत नंदकी नारी गैयन कहा गिनाईजी ॥
मोहिं रिस है अनमिली बातकी जीत कि कौन चलाईजी ॥ १ ॥
कहां बसत तुम कहां कन्हाई कब घेरी मगमाईजी ॥
सुनिहैं कहूँ तिहारेनाहू कहत लाज नाहिं आईजी ॥
तुम नहिं अपनी वोर निहारो मेरो बाल कन्हाईजी ॥
ऐसी बात कहतहो आई झूठी सहिय न जाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

सहि जात न झूंठी बात आय तुम कहत हो बात बनाई ॥
धनि धन्य कही तुम आय सुनी मैं रहि मनमाँहि लजाई ॥
माखन माँगत हरि रोय ताहि तुम दोष देत हो आई ॥
विनकाजहि लावति दोष ईश सों नेकहु डरपति नाई ॥
मनुबीसहि बरस कन्हाई, तुम कहत हो ऐसी आई,
मैं सुनि यह अचरजपाई ॥ सुनहु महरि तुम बात हमारी हरि सीखे चतुराई ॥ सहि जातन० ॥ १ ॥

बालकही हरि बन जात आत तब तेरे धाम कन्हाई ॥
जब बन कुंजनमें जात तबहिं प्रगटावत हैं तरुणाई ॥
यह है अचरजकी बात यशोमति तुम्हरे सांच न आई ॥
तुम देखहु बनमें जाय एक दिन तरुकी ओट छपाई ॥
बरस हैं दशके वीस कन्हाई, निज देखहु नैननजाई,
सुनि बोली यशुमति माई ॥ दीठ लगावति हो घर आई
दश अरु बीस बताई ॥ सहि जातन० ॥ २ ॥

तुम आवत मेरे धाम श्याम को दीठ लगावत ग्वारी ॥
अब जाहु घरन ब्रजवाम बात मैं जानी सकल तिहारी ॥
यह जरहु तुम्हारी आँख श्यामको सकत हो नाहिं निहारी ॥
आपहि छेरतहो जाय आय सब मोसों कहत पुकारी ॥
मोकों यह आय सुनाई, ढीठहि अब भयो कन्हाई,
कहतहु कछु लाज न आई ॥ तब बोलीं सब बाम यशोमति
कहा कहो हम आई ॥ सहि जात न० ॥ ३ ॥

कीनी निजसुतकी कानि गारि तुम कोटिन हमें सुनाई ॥
जीवहु युग युग ब्रजमाहिं श्याम कहा हमको है प्रियनाई ॥
कहाकरे खिजाई बहुत तबहिं हम तुम सों कहत दुखाई ॥
कीनो नीको तुम बोध दोष उलटो हमें दियो लगाई ॥
सुतको तुम बरजति नाई, हम पर रिस करत सदाई,
हम कही सो सांच न आई ॥ तुम कही अपपटी बात आय यों
कहति यशोमति माई ॥ सहिजात न झूंठी बात आय तुम
कहत हो बातवनाई ॥ ४ ॥

दोहा—मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात ॥
तुम तरुणी हरि तरुण नहिं, कहो समुझिकेबात ॥

चौबोला–कहो समुझि कै बात ऐसी यहमोंहिं कहो जिनआईजी
सुनत वचन यशुमतिके ग्वालिन निज निज धाम सिधाईजी ॥
यह यशुमाति गोपिनको झगरो कृष्ण प्रेम रह्यो छाईजी ॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई विहारन जीवन गाईजी ॥ १ ॥
मोहन दधिको दान लगायो ब्रज घर घर सुनपाईजी ॥
जैहैं दधिलै जहां कन्हाई सब मन रुचि उपजाईजी ॥
यह अभिलाष सबन मन आई प्रगट न काहु जनाईजी ॥
श्याम सखनको लिये बुलाई कह्यो सबन समुझाईजी ॥ २ ॥

दोहा–वृंदावन मग घेरहैं, उठहू काल्हसवार ॥
यमुनाके तट लुकरहो, चढि चढिके तरुडार ॥

चौबोला–चढि चढिके तरुडार रहो छिप ऐहैं मिलसब ग्वारीजी॥
नित प्रति दधि बेचनको जावैं या मारग मिल सारीजी ॥
राधा चन्द्रावलिको यूथा कैयक गोप कुमारीजी ॥
ललितादिकनागरी बरूथा घेरलेहु सब नारीजी ॥ १ ॥
भली कही यह बात कन्हाई कहत सखा हरषाईजी ॥
काल्हि उठैंगे प्रात चलहु घर भई सांझ अब भाईजी ॥
मात पितनको अति सुखदीनो सब निज निज घरजाईजी ॥
रुचि सों भोजन खाय कछुक तब सोये सब सुखपाईजी ॥ २ ॥

दोहा–प्रात उठे सब गोप सुत, जहँ तहँ खोल किवाँरि ॥
ग्वालनकी बानी सुनी, जागे कृष्ण मुरारि ॥

चौबोला–जागे कृष्ण मुरारि टेरत सखा नन्द द्वारपर आईजी॥
आवहु उठ घनश्याम कन्हाई कहा अबेर लगाईजी ॥
ग्वाल वचन सुनि यशुमतिं माई दिये जगाय कन्हाईजी ॥
मात वचन सुनि कुँवर कन्हाई उठे शीघ्र अतुराईजी ॥ १ ॥
लैपट पीत मुकुट शिर धारचो मुरली लै कर माईजी ॥

सखन सहित यमुना तट आये कहत श्याम हरषाईजी ॥
भली करी उठ प्रातहि आये लीनो मोहिं बुलाईजी ॥
आवत ह्वैहैं अब ब्रजभामिन लैलै दधि समुदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मनमें अति आनंद करि, हँसे सखा देतारि ॥
कहत सखन सों हँसि हरी, जाय चढो द्रुमडारि ॥
चौबोला—जाय चढ़ो द्रुम डारि मूंद मुख बैठरहो सब जाईजी ॥
जिहिं विधि युवती कोउअ नजाने तिहिं विधि रहहु छिपाईजी॥
युवती गण सब बनहिं मँझारी जब जानो सब आईजी ॥
कूद परो तब सबहि द्रुमनते दैदै नंद दुहाईजी ॥ १ ॥
कीजै मुरली शृंग ध्वनी सब शंख शब्द घहराईजी ॥
जासों युवती गण बनमाई उरन जाँय अकुलाईजी ॥
घेर सखन इहि बिधि डरपावो बहुरि कहो समुझाईजी ॥
नितहि हमारे मारग आवै बेंचतहो दधि जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आज जान नहिं पायहो, जैहो दान चुकाय ॥
ऐसे हरि समुझायके, मनकी प्रीति बढ़ाय ॥
चौबोला-मनकी प्रीति बढाय पावत सुखमें लखिके ब्रजबालाजी॥
तुमसों नाहिंन कछू दुराऊं कहत सखन गोपालाजी ॥
इहि मारग वेचन दधि जावै घेर लेहु सब ग्वालाजी ॥
आवतह्वैहैं सब ब्रजबाला कहत सखन नँदलालाजी ॥ १ ॥
सबकी सुरत श्यामकी वोरी प्रात उठीं ब्रजनारीजी ॥
अंग अंग आभूषण साजे दृगन दीप सुत धारीजी ॥
चित्र विचित्र वसन तनु धारे अंगिया सुभग सवांरीजी ॥
बेंदी भाल मांग मोतिनकी अंग छवी अतिभारीजी ॥ २ ॥
दोहा—दशनदमक अधरन अरुण, नासा बेसर धारि ॥
गोरे मुख छबि वसन नव, नवयोवन ब्रजनारि ॥

चौबोला–नवयोवन ब्रजनारि चलीं सब सुखमा बढी अपारीजी॥
ब्रजके खेडे जाय भई हैं सब भामिने इक ठारीजी ॥
निजनिज यूथ बनाय चलीं सब दधि मटुकी शिरधारीजी ॥
बेचन दही चलीं ब्रजनारी षटदशसहस गुवारीजी ॥ १ ॥
सबके मन मग मिलाहिं कन्हाई कहत न काउ जनाईजी ॥
करत जायँ गुणगान विहारी पगनूपुर छबिछाईजी ॥
हरि जानी युवती सब आवत कह्यो सखन समुझाईजी ॥
सुनत श्यामके मुखके बैना चढे द्रुमन सब जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–पंच सहस जे सखाते, जहँ तहँ रहे लुकाइ ॥
कछुक ग्वाल सँग राखि हरि, आगे गये कन्हाइ ॥

चौबोला–आगे गये कन्हाइ जायकै घेरयो मग बनवारीजी ॥
लैलै करन सुमनकी सांटी मन आनंद अपारीजी ॥
इहि अन्तर आई ब्रजनारी देख्यो बन कछु भारीजी ॥
पाछे तेहीं लई हँकारी कहां जात हो ग्वारीजी ॥ १ ॥
एक संग जुर भई सब ठाढी चितवत चकित अधीराजी ॥
मुकुट शीश तनु चित्रित चंदन दृष्टिपरे बलवीराजी ॥
लीने सखा संग मगरोंके ठाढे यमुना तीराजी ॥
ठटकि रहीं युवती तिहिं ठाई लखि ग्वालनकी भीराजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत वचन मुख भय सहित, भयो हर्ष उरमाहिं ॥
मगमें ठाढो साँवरो, आगे जैहै नाहिं ॥

चौबोला–आगे जैहैं नाहिं कहति कोउ चलत सखी क्योंनाईजी
कोऊ कहति घरहि फिर जै हैं हम नाहें आगे जाईजी ॥
कोउ कहत कहा करैं कन्हाई इनते कहा डराईजी ॥
कोऊ कहति लूटलै कालहै हमको कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥

१ शोभा । २ स्त्री । ३ झुंड । ४ रास्ता ।

माँगत है गोरसको दाना भयो अति ढीठ कन्हाईजी॥
सुनि ऐसे मोहनके ख्याला फिरीं घरन समुहाईजी॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई कूदहु सब झहराईजी॥
जात फिरी युवती घर गावहिं घेरहु जान न पाईजी॥॥२॥

दोहा—तब सब ग्वालन चहुँ दिशा, तरुनहिलाई डार॥
शंख शृंग मुरली ध्वनी, शब्द कियो इकबार॥

चौबोला—शब्द कियो इक बार चकित सबतबचितईचहुँघाईजी
डारन डारन देखे ग्वाला तब मनमाहिं डराईजी॥
कूद कूद तरु तरुते धाये घेर लई सब जाईजी॥
कहत नितहि दधिवेचन जावो आज पकर हम पाईजी॥१॥
दान लगत यहां श्यामसुन्दरको सो सब देहु चुकाईजी॥
अबतो देहैं जान तबहिं हम तुमको नंददुहाईजी॥
दधि लेजात प्रात तुम नितही आवत सांझ सदाईजी॥
दान मारि नित जात करत तुम भली बात यह नाईजी॥२॥

दोहा—ठाढे यमुना तीर हरि, जावहु दान चुकाय॥
यह सुनि हँसि ग्वालिन कह्यो, नई सुनोरी आय॥

चौबोला—नई सुनोरी आय कन्हाई दधिपर दान लगायाजी॥
यह नई रीत चलावन कारन जननी सिखै पठायाजी॥
यमुना तट ते श्याम पठाये सखा लेन सोइ आयाजी॥
सूधे अपने मारग जाहू काहे सब इतरायाजी॥१॥
सूधे मांगि लेत किन सोई दधि माखन कोउ खावोजी॥
बांधत कहा अकासहिं डोरी इन बातन कछु पावोजी॥
दान बजार हाटमें पावो कान्है जाय सुनावोजी॥
बोले सखा सुनोरी ग्वारी कहा तुम हमहिं डरावोजी॥२॥

दोहा—गांव बसेको सुख यहै, संक न मानति काय ॥
मांगत अपनो दान हम, कहति मांगाकिन खाय ॥
चौबोला—कहति मांग किन खाय हाट अरु बाटहि कहावतावोजी
अपनो दान तुमहुं सों चाहैं सो अब तुमहूँ चुकावोजी ॥
लेखो करि तुम श्याम सुन्दरको देहु दान तब जावोजी ॥
फेर न बूझत बात कोऊ तुम नित प्रति जावो आवोजी ॥ १ ॥
तुमको कैसो दान कहा सो मांगत कौन कन्हाईजी ॥
परिहै जान क्षणकमें अबहीं युवतिन बन अटकाईजी ॥
संग सखनकी भीर सुहाई आये हरि सुखदाईजी ॥
बोल उठी नागरि सब हरिसों मानतहौ तुम नाईजी ॥
दोहा—बनमें रोकत हो तियन, जैहै बात यहदूर ॥
कोपठये कहाँ छापहै, कि आपहि भये हुजूर ॥
चौबोला—आपहि भये हुजूर वैसीही चलहु श्याम तुमचालाजी
चलत बाप तुम्हरो जिहिं चाला सो तुम चलहु गोपालाजी ॥
वृथा रारि कहाकरत बनहिंमें छाँडिदेहु मगलालाजी ॥
विनादानदीने नाहिं जैहो सुनहु सकल ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
नहिं जानत मोको दधिदानी उघटत मात पिताईजी ॥
सब दिवसनको लेहुँ चुकाई नित प्रति जात चुराईजी ॥
माँगत छाप कहा दिखराऊं काको नाम बताईजी ॥
ऐसो को मोको नहिं जानत तुम इक मानत नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नीके हम जानत तुम्हें गोद खिलाये कान्ह ॥
वेदिन सब विसराय अब, भये जगाती आन ॥
चौबोला—भये जगाती आन करहु सो जो सदैव निभि आवैजी
हम नितही दधि बेचन आवैं ऐसी सही न जावैजी ॥
अजहूँ मांगि लेहु दधि देहैं खावहु हम सुख पावैंजी ॥

दान वचन तुम कहा सुनायो यह मैं नाहिं सुहावैजी ॥ १ ॥
होत अवार जान अब दीजै कहा नइ रीत चलाईजी ॥
गोरस लेत प्रात सब कोई बहुरि धरयो यह जाईजी ॥
जब देहो तबही सब जैहो बिन दिये जान न पाईजी ॥
तुमसों लेन बहुतहै हमको सो अब देहु सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नित आवति हमरी डगर, जात चुराये दान ॥
दिन दिनको लेखो भरो, तबहीं देहों जान ॥

चौबोला–तबहीं देहों जान ऐसो तुम हठ ना करहु कन्हाईजी ॥
वनमें रोकत नारि पराई पुनि परिहै कठिनाईजी ॥
आये दान पहर तुम कापै सो हमें देहु बताईजी ॥
सबको राजा कंस विराजै तुम घरहीके राईजी ॥ १ ॥
बहुरि सँभारि अबहिं पर जैहैं जो नेकहु सुन पैहैंजी ॥
करत अचकरी यह तुम मोहन बात दूर लौं जैहैंजी ॥
हम गुहरावें जाय कंससों तुमको पकरि बुलैहैंजी ॥
ऐसी विधि जो करन लगेहो को या ब्रजमें रैहैंजी ॥ २ ॥

दोहा–लिये सखा सँगसेतके, करत फिरत उतपात ॥
कठिन कंसको राज्यहै, नेकहु नाहिं डरात ॥

चौबोला–नेकहु नाहिं डरात सुनत यह उठे श्याम रिसहाईजी ॥
लीनो कछु दधि छीन कह्यो अरु मानति हो तुम नाईजी ॥
बसन छोर तरु सों अटकाये बासन दिये ढुराईजी ॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो लीजो मोहिं बुलाईजी ॥ १ ॥
मोको कहा कंस दिखरावो मारों पलमें वाईजी ॥
अब तो मोसों बैरबढायो करिहौं मनकी भाईजी ॥
मेरे हठ क्यों निबहन पैहो देखों कैसे जाईजी ॥
गोरसबेच बहुरि हम ऐहैं देखत रहियो कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बोले ज्वाब न देहिंगी, रहिहैं नाहिं डराय ॥
सुनि ऐहैं गृहते जनहिं, बहुरि सँभारि न जाय ॥
चौबोला—बहुरि सँभारि न जाय नेकहू गोरस देहैं नाईजी ॥
ऐसेही देखत तुम रहियो फिर पाछे पछिताईजी ॥
धरिकै यशुमति पै ले जैहैं तहां कछु ज्वाब न आईजी ॥
हम पै दान न पैहो नेकहु मानहु बात कन्हाईजी ॥ १ ॥
गृह जन कहा बतावहि मोको कंसहि लेहु बुलाईजी ॥
देखतही तुम सबके मारों पूजा करहुँ बनाईजी ॥
अब मैं हूं अरु तुम सबही हो देखों कैसे जाईजी ॥
सूधे दान देतहो नाईं बात करत अनखाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जो कंसहि मानत नहीं, तो तुम घरके राय ॥
सिंहासन बैठत नहीं, क्यों बनचारत गाय ॥
चौबोला—क्यों बनचारत गाय मोरको मुकुटहि देहु उतारीजी ॥
नृपति क्रीटमाथे पर लीजे गुंजै माल किमधारीजी ॥
नृप भूषण किन करत शृँगारा छत्र चमर शिर ढारीजी ॥
तजहु मुरलि अब नौबत बाजै हम लखि होयँ सुखारीजी ॥ १ ॥
हमहूं यह लखिकै सुख लेहैं सब तुम्हरे कहवावैजी ॥
झगरत कहा दहीके काजै देखिलाजहमें आवैजी ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी तियकी तुम्हें रजधानी भावैजी ॥
मेरो दासन दास कहावै सो सपने नहिं चावैजी ॥ २ ॥
दोहा—सदा राज मेरो ब्रजहि, अरु काकी ठकुराइ ॥
तुम्हें राज लागत बड़ो, मम प्रभुता नहिं पाइ ॥
चौबोला-मम प्रभुता नहिं पाइ कहत हो जानत तुम्हें कन्हाईजी ॥
काहेको अब मुख अपने ते कीजे बहुत बडाईजी ॥

१ रंच। २ राजा। ३ घुँघची।

कांधे कामरलेकर लकुटी फिरत चरावत गाईजी ॥
करत कहाहो बाड़ि बडिबातें देखी है ठकुराईजी ॥ १ ॥
यह कमरी कमरी तुम जानो जितनी बुद्धि तुम्हारीजी ॥
यापरवारों चीर पाटम्बर तीन लोक सुखकारीजी ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाय निहारी सो निंदित तुम ग्वारीजी ॥
कमरीके बल असुर संहारों संत उधारन हारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कमरी सब सुख योगहै, जाति पांति सुखदाइ ॥
सुनत हँसीं ब्रजबाल सब, सांची कही कन्हाइ ॥

चौबोला–सांची कही कन्हाइ धन्य धनि यह कमरी तुम धारोजी
सब विधि तुम्हें निभाहन हारी याको जिनहिं बिसारोजी ॥
यहै सेज करि भूमि बिछावो यहै ओढि गउ चारोजी ॥
याही ते वर्षा जल टारो शिशिर शीत निरवारोजी ॥ १ ॥
यहै उठगनी शीश बनावो लेतहो घाम बचाईजी ॥
यहै सिखावति सब परपाटी गृह सब ठाठ बनाईजी ॥
हम जो कहन चहतही तुमसों सो तुम आय सुनाईजी ॥
कीनी जात प्रगट तुम अपनी युवतिन खूब हँसाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तापर मांगत दान दधि, रोकत बनहिं मझार ॥
तुम्हें न छाजत पीतपट, कामरि ओढनहार ॥

चौ०-कामरि ओढनहार कहत मोहिं सुनहु बात सब ग्वारीजी ॥
उपमा कहत सत्य यह जगमें बालक अरु जे नारीजी ॥
इनसों बहुत हेतु नाहिं कीजे मूँड चढ़त पुचकारीजी ॥
जो मनकरै सोई करडारै सो गुण तुमकरो सारीजी ॥ १ ॥
बात करत में तुम इठलावो कहत आनकी आनैजी ॥
सदा छाछकी बेचन हारी हमको तुम कहा जानैजी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानत नन्दसुवन पहिचानैजी ॥

गाय चरावत बन बन डोले, दुहत धेनु सोउ जानैजी ॥ २ ॥
दोहा–पुनि जानत चोरी करी, घर घर मखान खाय ॥
जान परी यह बात अब, दानी भये कन्हाय ॥
चौबोला–दानी भये कन्हाय और सुने बांधे यशुमति माईजी ॥
ऊखलसों दोऊ भुज सांदे सो किन कहत कन्हाईजी ॥
तब सहाय करि हमहिं बचायो बंधन आय छुड़ाईजी ॥
जानत रहत यहै ब्रजमाई दूर बसत कहुँ नाईजी ॥ १ ॥
हँसी लगत सुन बात बावरी कहति कहा तुम आईजी ॥
कब जन्मत हमको तुम देख्यो कोहै मात पिताईजी ॥
कब चोरी पकरयो तुम हमको कबै चराई गाईजी ॥
दुही गाय किन कहो कौनकी कब बांधे हममाईजी २ ॥
दोहा–तुम जानाति मोहिं नंदसुत, नंद कहाँते आहि ॥
मैं अविनाशी अवगती, सब माया वश माहिं ॥
चौबोला–सब माया वशमाहिं सुनत सब कहति सखी हरषाईजी
ऐसेहू गुण जानत मोहन बात तुम्हारी पाईजी ॥
जैसे निदरयो तुम सब काहू तैसेहि मात पिताईजी ॥
तुमको यशुमति महरि न जाये कहांते आये कन्हाईजी ॥ १ ॥
घर घर माखन चोरयो नाहीं नाहिं बाँधे महतारीजी ॥
हाहा करि हम नाहिं छुड़ाये सांच कहो बनवारीजी ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी झूंठी बात तुम्हारीजी ॥
कर्म धर्मके मैं वशनाहीं भक्तन हित अवतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–योग यज्ञ नहिं मनधरौं, दीन वचन सुनधाउँ ॥
भावाधीन सबमें रहौं, काऊ ते न डराउँ ॥
चौबोला–काऊ ते न डराऊं ब्रह्मा अरु कीट आदिके माईजी ॥
व्यापक हौं समान सब ठाईं तुम जानति हो नाईंजी ॥

कहां कहांकी बातें कहि कहि कहा हमें डर पाईजी ॥
बार बार कहि बोध करावो स्वर्ग पताल बताईजी ॥ १ ॥
जो लायक कोउ होय आपके तासों जाय सुनावोजी ॥
कौन प्रकृती परी तियनको बनमें रोक रखावोजी ॥
केतिक दधिको दान कन्हाई जाकारण अटकावोजी ॥
दधि माखन सबही तुम लेहू रीती हमाहिं पठावोजी ॥ २ ॥
दोहा–जो तुम याहीमें सुखी, रीतिहिं देहों जान ॥
दधि माखन मैं कहा करों, द्यो सकल वणिजको दान ॥
चौ०-सकल वणिजको दान देहु सोइ निताहि बणिज तुमलावोजी
लेखो करि सब मोहिं चुकावो तब अपने घर जावोजी ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहो जब लग दान चुकावोजी ॥
करत बणिज तुम नये बनाये नितहिं जगौंत चुरावोजी ॥ १ ॥
सुनि बानी हरि नागर नटकी युवतिनके मन भाईजी ॥
बोलीं हरिसों सब मुसकाई अति आनँद मन माईजी ॥
ऐसे कहो वणिजको अटके भूले कहा कन्हाईजी ॥
कहा माँगत दधि दान कन्हाई हम मन माँझ लजाईजी ॥ २ ॥
दोहा–वणिजहेत रोकी हमें, सुनहु श्याम सुखरास ॥
हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा बणिज हमपास ॥
चौबोला–कहा बणिज हमपास कहो किन धरिके नाम बताईजी
कहो बणिज युवती कहुँ करहीं भूले किताहिं कन्हाईजी ॥
सो हमको तुम देहु बताई किन सो लियो चुकाईजी ॥
लैलै नाम बतावहु तुमहीं बूझति कहा हम पाईजी ॥ १ ॥
तुम जानाति मैंहूं कछु जानो मालसो नाहिं छिपाईजी ॥
डारि देहु जापर जो लागे फिर मांगत कोउ नाईजी ॥

१ स्वभाव। २ खाली। ३ कर।

इतनेहीको लरत वृथाई समुझि लेहु मन माईजी ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी बात श्यामकी पाईजी ॥ २ ॥
दोहा-इनहीं सों बूझो कोऊ, सुनहु बतावें सोय ॥
गूढवचन हरि वदनते, सुनत सबन सुख होय ॥
चौबोला-सुनत सबनसुख होय जनावतिकोऊकाउअनाईजी ॥
लोक लाज डर सबकोउमानें रहीं मनहिं सुखपाईजी ॥
जानहिं सब हरि रसिक पुरंदर सुन्दरि सब हरषाईजी ॥
तब बोलीं हँसिकै ब्रजबाला तुमहीं कहहु कन्हाईजी ॥ १ ॥
कहा माल देख्यो हम पाई जिहिं कारण अटकाईजी ॥
बैललदाये देखी हमको बूझत तुमहिं कन्हाईजी ॥
गिरी छुहारा दाख लायची लौंग जायफलल्याईजी ॥
कहा लादे हम जातचली हैं सो किन भाषि सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा-जाकी देहिं जगात हम, दीजै वणिज वताइ ॥
जो अब वेग कहो नहीं, तुमको नन्द दुहाइ ॥
चौ०-तुमको नन्ददुहाइ कहतितुम कहा मोहिं वणिजवतावोजी ॥
लौंग मिरच कहि कहि बहकावो मालसो नाहिंसुनावोजी ॥
तुमतो माल गयंदलदायो महिष वृषभ दिखरावोजी ॥
बडे मोलकी बस्तु जो होई दुरत न कोउ दुरावोजी ॥ १ ॥
देहो दान जान जब पैहो मोसों कहा छिपाईजी ॥
दधिको दान मेटि यह ठानी जानपरी चतुराईजी ॥
देती दही कछुक हम छोहन खाते कुँवर कन्हाईजी ॥
इन बातन अब खोयो सोऊ यह कहि सब मुसुकाईजी ॥ २ ॥
दोहा-सूधे दान नदेहुगी, हो तुम बड़ी प्रवीन ॥
उठ गहि भुजा झकोर कह्यो, लेहों गोरस छीन ॥
चौबोला-लेहों गोरज छीन कहत हरि सुनहु सकल ब्रजनारीजी॥

झटक पीतपट कहति लाडिली भये तुम ढीठ मुरारीजी ॥
हरि रिस करि अंकम गहिलीनी प्रेम प्रीति उर भारीजी ॥
टूट गई प्यारी उर माला तब घेरे बनवारीजी ॥ १ ॥
गहि गहि अंकमलेत सबनको झगरत रिसाहि बढाईजी ॥
हँसत सखा सब देकर तारी पकरे गये कन्हाईजी ॥
हांक दई तबहीं नँदलाला लीने सखा बुलाईजी ॥
धाय परे सब ग्वाल सखिनसों लीने श्याम छुड़ाईजी ॥ २ ॥

दोहा–रिस करि बोले ग्वाल सब, कहत सखिन झहराय ॥
भई ढीठ मानत नहीं, जानति नाहिं कन्हाइ ॥

चौ०-जानहि नाहिं कन्हाइ सखिनसों कहत सकल मिलग्वालाजी
देहों ज्वाब देवको चीन्हों बोली सब ब्रजबालाजी ॥
बन भीतर रोकी सब नारी कियो हमें जंजालाजी ॥
बड़े सुधरमा आप कहावत तुम अरु ये नँदलालाजी ॥ १ ॥
ऐसी साख सखनकी भरिकै जीत नृपति तुम अैहेंजी ॥
तजहु ख्याल लरिकाई तबकी अब न तुम्हारी सैहेंजी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहो कियो आपनो पैहोजी ॥
अरु ये बात घरन सुन पैहें मात पिता कहा कैहेंजी ॥ २ ॥

दोहा–तोरयो मुक्ताहार हरि, कहा कैहें घरजाय ॥
आपन भोरी बनतहो, हरिको दोष लगाय ॥

चौबोला–हरिको दोष लगाय जबहिं तुम झपटी पीत पिछोरीजी
तब उन मोतिनकी लरतोरी करन लगीं तुम जोरीजी ॥
माँग्यो दान श्यामने अपनो तुम लरवेको दोरीजी ॥
देहो दान जबहिं जैहो नहिं ठाढी रहो यहि ठोरीजी ॥
झक झोरा झोरी तुम करि करि हरिको लेत डराईजी ॥
मोहनकी सर और दूसरो को त्रिभुवनके माईजी ॥

नन्द नँदन ब्रजराज सदाई तुम सब जानति नाईजी ॥
जानत हम सबनीके इनको कहा तुम करत बड़ाईजी ॥ २ ॥
दोहा–नृपति त्रास वसुदेवजी, ल्याये आधीरात ॥
प्रतिपारे यशुमति महरि, अब ये बात बनात ॥
चौबोला–अब ये बात बनात आये हैं अति शुभ घरके माईजी॥
काउअ बदत ताहिते नाई गये श्याम इतराईजी ॥
कहत ग्वाल हम ढीठ कही यों श्याम हिं झगरत आईजी ॥
इतनेपर मानत नहिं हारी लाखन गारि सुनाईजी ॥ १ ॥
बहुत सही हम बात तुम्हारी झगरति हो तुम ग्वारीजी ॥
अब लों तुम यह बात न जानी दधिदानी बनवारीजी ॥
अब नहिं छोडों नन्द दुहाई बोल उठे गिरिधारीजी ॥
अब तो दान आपनो लेहों जान देहुँ तब प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कहा बात तुम कहत हो, माँगत कहा कन्हाइ ॥
फिर फिर कहि कहि नन्द सों, हमाहिं डरावत आइ॥
चौबोला–हमहिं डरावत आइ डरावहु जो तुम तेहि डराईजी॥
यहां डरावत कौने आई हम तुमते घटनाईजी ॥
तोरचो मुक्ताहार हमारो कैहैं यशोदहिजाईजी ॥
इतनो धन कहां पावोगे अब परिहै खबर कन्हाईजी ॥ १ ॥
एक हार मोहिं कहा बतावो भूषण कहा दुराईजी ॥
मोतिनमांग जडाऊ टीकी कर्ण फूल छबि छाईजी ॥
कंठलरी दुलरी तिलरीगर तापरहार सुहाईजी ॥
सुभग हमेल बिजोटा बाजू मुंदरी नगन जडाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सोभा सगरे अंगकी, सबको नाम बताय ॥
यामें तुम्हरो बांटहै, कहति ग्वालि इक आय ॥

१ भय। २ पालन।

चौबोला-कहति ग्वालि इकआय भूषणहु देख न सकत कन्हाईजी
याई लिये भये घटवारे घेरत हो मगमाईजी॥
आपनहूं कछु दई घटाई यशुमतिके नँदराईजी॥
आई पहरि जितो हम नाहीं दूनो है घर माईजी॥ १॥
देखि परत कछु बहुत लुभाने सूनो बनहिं लखाईजी॥
बाँट कहा तोलों सब मेरो जोलों न दान चुकाईजी॥
भूषण मोको कहा गिनावो बहुत वस्तु तुम पाईजी॥
मानो मैं कहा जानत नाई सो किन देत बताईजी॥ २॥

दोहा-समुझि लेहिंगे बाँट पुनि, लेहों सबको दान॥
मैं तुमसों सांची कहत, देहों तबहीं जान॥

चौबोला-देहों तबहीं जान कहत हों काहे बात बनावोजी॥
युवतिनमें अब भये उजागर जिनाहिं अधिक इतरावोजी॥
नित प्राति गाय चरावन जावो छाक मांगतुमखावोजी॥
हाथ लकटिया काँधे कामरि बछरन पाछे धावोजी॥ १॥
आप पीत पट कटि कसि आये यों कहा बडे कहावोजी॥
भये कछुक अब नवल सुजाना तब यह दान लगावोजी॥
देहो दानकि झगराति हो तुम कहा बहु बात बनावोजी॥
तापाछे तुम हमहिं निदरियो प्रथमहिं दान चुकावोजी॥ २॥

दोहा-कहति कहा निदरे तुम्हें, सहजहिबात सुनाइ॥
आदिहिते जानत तुम्हें दाननहमें सुहाइ॥

चौबोला-दान न हमें सुहाय कहत चली करिकरिकैरिसग्वारीजी
दधि मटुकी माथे धर लीनी तब जानी बनवारीजी॥
तब हरि गहि अंचल झटकारी जात कहां वणिजारीजी॥
विनादान क्यों होत निभाहू वणिज करत तुम भारीजी॥ १॥
नाम तुम्हारे सकल वणिजको सबमैं देहुँ बताईजी॥

देहु दान तुम मोहिं सकल मिल देखहु सब ठहराईजी ॥
एक होय तो छांडि दीजिये सब क्यों छोड्योजाईजी ॥
तुम विचार देखो सब अपने यहै बात मनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–लिये जात एती वस्तु, दान देत खिजराय ॥
मत्त गयंद तुरंग सो, कैसे दुरत दुराय ॥
चौबोला–कैसे दुरत दुराय हंस अरु मोर केहरि मृग ल्याईजी ॥
कनक कलस मदरससों भरिये सो किम रहत दुराईजी ॥
चमर सुगंध कपोत कीर बर कोकिल धनुष धराईजी ॥
कैसे निबहैं दान बिना यह एतो धन तुम पाईजी ॥ १ ॥
सुनि यह चकित कहति ब्रजबाला कहा तुम श्याम बतायेजी॥
तिनको नाम लेतहो सो हम सपने नाहिं लखायेजी ॥
कहां तुरंगम गज हम पाहीं कब इन कलस गढायेजी ॥
मानसरोवर हंस रहतहैं चमर धनुष कहांपायेजी ॥ २ ॥
दोहा–येसब हमपै कहाँहै, सोतुम देहु बताय ॥
जहाँ होय तहँ तहांते, लीजै दान चुकाय ॥
चौबोला-लीजै दान चुकाय कह्यो तब कहत श्याम समुझाईजी
कर विचार देखो मनमाई इतनो सब तुम पाईजी ॥
अपने सब तुम अंग निहारो जोबन रूप सवाईजी ॥
करहु निवेरो वेग सबै अब कहा अबेर लगाईजी ॥ १ ॥
कहौ तुमहुँ कछु हमहूं कैहैं जाहु घरन समुदाईजी ॥
जान्यो अब आपनो वणिज तुम दीजै दान चुकाईजी ॥
जो कछु धोखो होय मनहिंमें कहौ फेर समुझाईजी ॥
चमर चिकुरभ्रू धनुष कटाक्षी मृग हगशर कजराईजी ॥ २ ॥
दोहा–कंठ कपोत कोकिल शब्द, कीर नासिका बोर ॥
अधर सधरविद्रुम सोई, पट घूँघटहै मोर ॥

चौ०—पट घूंघट है मोर उरोजन कंचन कलस लखावेजी ॥
जोवन मदरस भरे विचारो कटिकेहरि छवि छावेजी ॥
हंस गयंद चाल छवि सोई सोरभ अंग सुहावेजी ॥
इतनो है सब बणिज तिहारो दान दियो नहिं जावेजी ॥ १ ॥
लेहों दान देहुगी जैसे धीरज धरिहौं नाईजी ॥
यह सुनि हँसि बोलीं ब्रजबाला बात तुम्हारी पाईजी ॥
माँगत ऐसो दान कन्हाई जान परी तरुनाईजी ॥
याही लालच अंक भरत हो गहत हो आंचर आईजी ॥ २ ॥

दोहा—याही लालच फिरत हो, सखा लिये बनसंग ॥
घेरत हो युवतीनको, प्रकट्यो अंग अनंग ॥

चौबोला—प्रगट्यो अंग अनंग समुझि मन बैठरहो घर जावोजी ॥
कहि कहि हमसों ऐसी बातें जिन मरियाद घटावोजी ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो बनमाली कत हमपर रिसहावोजी ॥
सूधे हम इक बात बखानी तुम कत सोर मचावोजी ॥ १ ॥
कबहूं जोइ सोइ करत विवादा कत मर्याद घटावोजी ॥
प्रातहिंते झगरति बिनकाजे दान चुका घर जावोजी ॥
बेटी बहू बड़े घरकी हो कत विलंब बन लावोजी ॥
हरि तुम कबते भये सयाने उलटो दोष लगावोजी ॥

दोहा—बूझी तुमसों हम कही, तुम उलटे सतराय ॥
कहिये बात बिचारके, तुम सर्वज्ञ कहाय ॥

चौबोला—तुम सर्वज्ञ कहाय प्रगट कहि ऐसो दानसुनावैजी ॥
हमरो ब्रज उपहास करावै ब्रजके लोग हँसावैजी ॥
तुमहिंलाज कै हमें कन्हाई बात घरन यह जावैजी ॥
जाति पांतिके सबहिं हँसैंगे जो ब्रजमें सुन पावैजी ॥ १ ॥
कहियो प्रातफेर जब आवें जानदेहु गोपालाजी ॥

सुनहु ग्वालनी बात हमारी बोल उठ्यो इक ग्वालाजी ॥
कतहि लजात बावरी इनसों करहु प्रीति सब बालाजी ॥
हरि संग करहु विहार नवलतुम नवलहि श्री नँदलालाजी॥२॥

दोहा–भलो मनावो कान्हको, हँसन देहु संसारि ॥
कहवावत हो श्याम तुम, सुनबोलीं ब्रजनारि ॥

चौबोला–सुनि बोलीं ब्रजनारि आपहू कहत हो हरिमनआईजी
तापर जोइ सोइ सखन सिखावत ऐसे भये हो कन्हाईजी ॥
बनमें सखन घेर बैठारी करत श्याम लँगराईजी ॥
भूलि गये वे दिवस कन्हाई माखन खात चुराईजी ॥ १ ॥
उरडरायघरको भजिजाते खिजत नैन भरे आईजी ॥
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा कीनी हमहिं सहाईजी ॥
अब भये बड़े बड़ी चतुराई जोबन दान सुनाईजी ॥
कैसी भई कहा हम जानें तबहिं हती लरकाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कब मैया बाँधे हमें, कबखायो दधि चोर ॥
नेकहुताकी सुधि नहीं, तबहिं हती मति भोर॥

चौबोला–तबहिं हती मति भोर भलो अरु बुरो ज्ञान कछुनाईजी
अपनो पर कछु समुझत नाहीं खेलत रहत सदाईजी ॥
अपनी सुरत करत नाहिं तबकी यमुनाके तट न्हाईजी ॥
सबके जबमैं वसन अभूषण दीने कदम चढाईजी ॥ १ ॥
बिना वसन तुम तब सब नागी जलमें रही छिपाईजी ॥
दिये वसन मैं तब सबहिंनके पुनि पुनि हाहा खाईजी ॥
बिना वसन जब बाहिर आई सब मोहिं विनय सुनाईजी ॥
कैसी भांति भई तब सबकी सो तुम सुधि बिसराईजी ॥ २ ॥

दोहा–मोहिं कहति चोरयो दही, बांधे ऊखल माय ॥
तबहिं सहाय करी हमैं, लीने जाय छुड़ाय ॥

चौबोला–लीने जाय छुड़ाय सखिन सों पहली बात सुनाईजी॥
सुनिकै हँसि सकुचीं ब्रजनारी मनहीं गई लजाईजी ॥
कहति भये अति निलज कन्हाई कहत मैं लाज न आईजी ॥
जाहु चले लोगनके आगे झूंठी बात बनाईजी ॥ १ ॥
करत हँसी तुम सखन सुनाई कहिहैं ये घर जाईजी ॥
झूंठी बात कहा हम जानैं हम तो सांचि सुनाईजी ॥
जैसी भांति भजे मोहिं कोई मानत तैसो ताईजी ॥
मम हित तप किम कियो तुमहिं मैं झूंठो परत लखाईजी ॥

दोहा–जो तुम अपने मन चहो, सो मैं लीनो जान ॥
अब निष्ठुर मन करत हो, देति नहीं किमदान ॥

चौबोला–देति नहीं किमदान कहत हो यह नाहिं हमें सुहाईजी
भली बुरी अरु जो कछु कहिहो सो सहि लेहिं कन्हाईजी ॥
सुनिये मोहनलाल हमें अब छांडि देहु घर जाईजी ॥
मात पिता खीजि हैं सब हम पर भई बेर वन माईजी ॥ १ ॥
काहे को तुम करत अबारी दधि बेचहु घरजावोजी ॥
मैं कहा करों तुमैं यह भावै लेखो करन चुकावोजी ॥
शुद्ध स्वभाव समुझि सब कोई करलेखो समुझावोजी ॥
जबहीमैं तुमसों सोइ लेहों तबहिं जान तुम पावोजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा ये हठ लागे हरी, माँगत कहा कन्हाइ ॥
बात कछू समुझत नहीं, कहा लेखो समुझाइ ॥

चौबोला–कहालेखो समुझाइ निपटही परे हमारेख्यालाजी ॥
इन बातन कहा पावत लाला मानहु मदन गोपालाजी ॥
अब तुम निपट करी बहुताई हँसि हैं गोपी ग्वालाजी ॥
घरते लीजो दान उघाई जानदेहु नँदलालाजी ॥ १ ॥

१ सरमाई। २ देख ।

अब तुम सब यह कियो जो लेखो सो विचार मैं पायोजी ॥
करकंकनदर्पण दिखरायो ऐसो ज्ञान सिखायोजी ॥
काहि न तुम्हें जानमैं देहों नीको बोधकरायोजी ॥
आपभई तुम चतुर सकल मिल मोहिं गँवार बनायोजी ॥ २ ॥

दोहा–हम ठाढे ह्वै ह्वै घरन, उगहत फिरि हैं दान ॥
फेरि कहां पाऊं तुम्हें, घरन नदेहों जान ॥

चौ०–घरन न देहों जान नृपतिको मैं कहा ज्वाब बताईजी ॥
भली भई नृप मान्यो तुमहूं चलो कंसपै जाईजी ॥
तबते लेन कहतहो दानहिं कहि कहि नन्द दुहाईजी ॥
हम अबलों जानी घरहीके दानी कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
नृपते दान पहिरि तुम आये दीने कंस पठाईजी ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बैना हँसे कछुक मुसकाईजी ॥
सो छबि निरख कहति ब्रजनारी कहा तुम हँसे कन्हाईजी ॥
सोई कहो मनहिं जो आई तुमको नंद दुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गोधनकी तुमें सौंहहै, सांची कहो कन्हाइ ॥
रीझि धौं खीजे कछू, हँसे कहा मुसकाइ ॥

चौबोला–हँसे कहा मुसकाइ सुनत यह अधिक हँसे गोपालाजी॥
कहत श्रीदामासों नँदलाला देखहु इनके ख्यालाजी ॥
यह अचरज इनको तुम हेरो कहति हँसे कहा लालाजी ॥
ताते हँसी अधिक मोहिं आवे सोंह देत ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
तब श्रीदामा सकल तियनसों बोल उठे मुसकाईजी ॥
हँसत श्याम तुमते इहि कारण पूँछति सोंह दिवाईजी ॥
हमहिं दिवावत सोंह हँसहु किन तुम तिय मिल समुदाईजी ॥
यहै तुम्हारी बान तियनकी थोरेमें खिसिआईजी ॥ २ ॥

दोहा—सहज हँसत नाहिं सकुचिये, जिनहींसौंह दिवाय॥
वेदानी प्रभु सबहिके, मांगत कबके आय॥
मांगत कबके आय जानत हम हैं ये कुँवर कन्हाईजी॥
प्रभु तुम्हरे मुख अब सुन पाई जानि परी प्रभुताईजी॥
होत नहीं प्रभुता इहि भांती घेरतहो बन माईजी॥
ये ठाकुर तुमरी सिवकाई देखो प्रभु हम आईजी॥ १॥
दधि लूट्यो अरु भूषण तोरे कही सोइ मन आईजी॥
जो कछु बच्यो सोउ अब लीजै क्यों हुँ जान हमपाईजी॥
देहु दान तबहीं तुम जैहो बोले कुँवर कन्हाईजी॥
आयोहूं पठयो मैं जाको देहुँ ज्वाब कहा जाईजी॥ २॥
दोहा—अबहीं पठवै बोल मोहिं, तब सन्मुखको जाय॥
तुमहिं करो घर जाय सुख, नृपकि गारिको खाय॥
चौबोला-नृपकी गारिको खाय नृपति बर जब मोहिंदे अटकाईजी
तब पुनि तुम विन कौन छुड़ावे तुमहिं कहांते ल्याईजी॥
लेत नाम मुखते नृपवरको जामुख निदर्यो ताईजी॥
आपुनतो नृप अरु नृपकोंहै अब कहा समुझे कन्हाईजी॥१॥
ऐसी तुम्हें बूझिये नाहीं तुम नृपके कहवाईजी॥
जिहिं मुख निदरे तिहिं मुख वंदे भले श्याम बलिजाईजी॥
जब हम कंस दुहाई दीनी तब उलटे रिसहाईजी॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई ऐसे डरे कन्हाईजी॥ २॥
दोहा—कंस त्रास हम कब कियो, बात न जानी जाय॥
कब हम शीश नवाइयो, कहति कहा तुम आय॥
चौ०-कहति कहा तुम आय कंस कहि कहा मोहिं डरपावतजी॥
कहा त्रास ताको उर आनै सुनत हँसी मोहिं आवतजी॥
तुम्हरे मनहिं बात यह भावे कंसके हम कहवावतजी॥

तो तुम कहो कौन नृपजाके ताके आप कहावतजी ॥ १ ॥
वाको नाम हमहुँ सुनि पावें ताकेइ हम कहवाईजी ॥
दूजो और कंसते कोहै तीन लोकके माईजी ॥
सो नृप वसत कहां सोउ जानें हमहूं तापै जाईजी ॥
यह सुनि हम अब अति डरपाई झूंठहिं हमहिं डराईजी ॥ २ ॥

दोहा—जानृपके हम हैं अरी, को नाहिं जानत ताहि ॥
जड चेतन नर नारि सब, तीन भुवन वशजाय ॥

चौबोला-तीन भुवन वशजाय नृपति सो वसत सुमनपुर माईजी
तिन पठयो मोहिं देकर बीरा सब जानत है वाईजी ॥
सुनत गूढ मोहनकी बानी बोलीं सब हरषाईजी ॥
जात तुम्हारे नृपकी जानी अबलों कहां छिपाईजी ॥ १ ॥
जैसे तुम तैसे हैं वोऊ एक रूप गुण दोऊजी ॥
यह अनुमान कियो हम मनमें भये एक दिन दोऊजी ॥
भलो बन्यो अब संग समाजा मिले तुमहिं से सोऊजी ॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ या पटतर नहिं कोऊजी ॥ २ ॥

दोहा—ठगत फिराति ठगनी तुमहिं, बोलति नाहिं सँभारि ॥
आवत मुख सोई कहत, भई ढीठ तुम नारि ॥

चौबोला-भई ढीठ तुमनारि अपन गुण औरन मांझि लगावोजी ॥
जाति जनावति दै दै गारी दान देत सतरावोजी ॥
तुम भये कान्ह सुधर्मा भारी ठगनी हमें बतावोजी ॥
अपने नृपसों कहो हमारी चुगली जाय सुनावोजी ॥ १ ॥
राजा बड़े जान हम पाये ल्यावहु धौंस चढाईजी ॥
तव हमहूं नृपपै सब जैहैं देखहिंको नृपताईजी ॥
तुमतो ठग आछे बने हो वनमें रोक रखाईजी ॥
हमें कहो काको ठगलीनों को हम मार बहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मंत्र यंत्र टोना ठगी, तुमहू जानत श्याम ॥
आपन ठग औरन कहत, ठगत फिरतसबवाम ॥
चौबोला–ठगत फिरत सब वाम बैठरहो बाततुम्हारीपाईजी ॥
यह ज्वानी हम पर चढ़ि आई बातें बहुत बनाईजी ॥
हमनहिं मानें बिलग तिहारो कहो सोई मन आईजी ॥
मैं कहाकरों दोष नहिंमेरो मोहिं पठयो नृपराईजी ॥ १ ॥
आवत हों या मारग नितही जोबन रूप भरायाजी ॥
लोचन दूतनजाय सुनाई तब नृप मोहिं बुलायाजी ॥
बैठ्यो सिंहासन तरुणाई शैशव महलनरायाजी ॥
तुरतहि मोहिं दान पहरायो तुम्हरे पास पठायाजी ॥ २ ॥
दोहा–तिनको नाम अनंग है, उनको दान चुकाय ॥
तिनकी आनहिं कहत हौं, देहु दान तब जाय ॥
चौबोला–देहु दान तब जाय बात यह हरिके मुखसुनपाईजी ॥
प्रेमसिंधु युवती मगनानी रहींथकित हरषाईजी ॥
काम नृपतिकी फिरी दुहाई अटक्यो जोबन आईजी ॥
को हम कहां रहति कहां आई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥१॥
नैन मूंदके ध्यान लगायो त्रसत मदन डर पाईजी ॥
लीजै सरवस दान शरण हम श्याम तिहारी आईजी ॥
देह दशा भूलीं सब बाला ऐसे कहि मनमाईजी ॥
यह धन तुमहित संचियो मोहन लेहु श्याम बलिजाईजी ॥

लावनी।

अहो श्याम सुन्दर ब्रजराज हरी सुख दाई ॥
जोबन अरु रूप चहै सो लेहु कन्हाई ॥
टेक–ऐसे सब ध्यान लगाय रहीं मनमाई ॥
बिनवतहैं बारंबार प्रेममें छाई ॥

अंतर्यामी भगवान मनहिंकी पाई ॥
मनहींमें सबसों मिले न देर लगाई ॥
खुलगये नैन सबहीके देह सुधिआई॥जोबनअ०॥१॥
देखे सन्मुख नँदलाल श्याम सुखदानी ॥
हम ठाढी बनके माहिं सुरत उर आनी ॥
लखि अचरज कीसी बात मनहिं सकुचानी ॥
कहां हती अबहिंलों नाहिं न कछु हम जानी ॥
ऐसी विधि मन हर लियो हरी यदुराई॥जोबनअरु० २
ह्वै रहीं ठगीसी कहा कहत नँदलाला ॥
कछु भई खुशी मन माहिं कि सोच विशाला ॥
सब दूर करो संकोच अहो ब्रजबाला ॥
परगट सब देहु सुनाय भयो कहा हाला ॥
बहुर न अब रोकत कोय तुम्हें बनमाई॥जोबनअ०३
रोकै हमको बन माहिं ऐसो कोउ नाईं ॥
हमको तो रोकनहारहि तुमहिं कन्हाई ॥
टोना डारत हो शीश करो मन भाई ॥
बरजोरी नृप बर काम कि देत दुहाई ॥
तुमको कहा परी यह बानि अहो सुखदाई ॥
जोबनअरु रूपहि चहै सो लेहु कन्हाई ॥ ४ ॥

दोहा–कैसेहु कृपा करो हरी, सब अपने घर जाय ॥
दान निबेरहु जाहु घर, बहुरि न रोंकों काय ॥

चौबोला–बहुरि न रोंकों काइ जानतहो मैंहूं करलेखो सबजी ॥
तुमहूं आप समुझि सब देखो जैहों दान दिये तबजी ॥
पिछलो देहु निबेर आज सब पुनि दीजो चाहे जबजी ॥
अब मैं भली कहतहौं तुमसों जो मानो मेरी अबजी ॥ १ ॥

को जाने हरि चरित तिहारे सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
अजहूँ दान नहीं तुम पायो हम सरवस अपनाईजी ॥
लेखो करलीजै मनभायो खाउ हमहुँ सुख पाईजी ॥
सखन सहित अब खावहु मोहन सद माखन हम ल्याईजी ॥२॥

दोहा—सुख पावैं सब देखिकै, लीजै दान उघाय ॥
अबदधि दानी नाम यह, प्रगट करैं हम जाय ॥

चौ०—प्रगट करैं हम जाय खाउ दधि हम तुमरी बलिजाईजी ॥
तब हरि हँसि सब सखन बुलाये बैठे सब मिल आईजी ॥
दोना बहु पलाशके ल्याये लिये सबन करमाईजी ॥
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला परसति ग्वालिन ल्याईजी ॥ १ ॥
भक्त भावके हाथ विकाने ग्वालनके सँग खावैजी ॥
निज निज मटुकिनते सब ग्वारी परसाति करन सुहावैजी ॥
श्याम पतूखिनते करनावैं निरखि ग्वालि सुख पावैजी ॥
धन्य धन्य आपुनको जानी जन्मसफल कहि खावैजी ॥

दोहा—कहति धन्य माखन मही, हितकर खात मुरारि ॥
तन मन वारति श्यामपर, अति आनँद ब्रजनारि ॥

चौबोला—अतिआनँद ब्रजनारि प्यारी सों माँगत कुँवर कन्हाईजी
देखैं तुमरो कैसो लागत देवहु नेक चखाईजी ॥
तुमरे दधिको स्वाद न पायो औरनको लियो खाईजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरिं अति हितकर दधि ल्याई मुसकाईजी ॥१॥
अपने कर अधरन परसि तब दीनो विहँसि खवाईजी ॥
अल्प चितै मोहन विहँसे तब प्यारी तन मुसकाईजी ॥
मीठो है यह अधिक सबनते मधुरे कह्यो सुनाईजी ॥
प्रेम विवस नाहिं नेक अघाये हरिजनके सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—गोपिनके हित खाइयो, माखन मोहनलाल ॥

परमहर्षि आनंद मन, परसति सब ब्रजबाल ॥
चौ०-परसतिसब ब्रजबाल ग्वालनसंग हँसि हँसि हरिदधि खावैजी
परमहर्ष सबके मन माहीं आनँद उर न समावैजी ॥
हँसत परस्पर सखा सयाने मीठो स्वाद बतावैजी ॥
हरि हँसि सबके चितहि चुरावै परमानँद उपजावैजी ॥ १ ॥
विलसत ब्रज विलास बनवारी दधि दानी कहवावैजी ॥
सुरगण तियन सहित नभमाईं निरखि निरखि बलिजावैजी ॥
धनि धनि ब्रजकी युवति सभागी जिन पै हरि दधिखावैजी ॥
जाकारण शिव ध्यान लगावै शेष सहस मुख गावैजी ॥ २ ॥
दोहा-मन बुधि वचन अगोचरे, पार नहीं कोउ पाय ॥
निगमनेतिनहिं पावही, नारदादि यशगाय ॥
चौबोला-नारदादि यशगाय अविगती अविनाशी कहवावैजी ॥
सो प्रभु ब्रजमें प्रगट विलासी जाहि मुनीजन ध्यावैजी ॥
योगी जप तप नेम संयम कर समाधि लगावैजी ॥
रूप रेख वर्णन नहिं जाके आदि अंत नहिं पावैजी ॥ १ ॥
पूरण ब्रह्म वश्य भक्तनके गोपी वल्लभ नावैजी ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके रोम प्रति श्रुति गावैजी ॥
कीट ब्रह्म पर्यंत जल थल आप सबै उपजावैजी ॥
सो हरि निज भक्तनके कारण लीला अमित उपावैजी ॥ २ ॥
दोहा-करता हरता आपही, आपहि पालनहार ॥
खात सोई माखन मही, गोपिन प्राण अधार ॥
चौबोला-गोपिन प्राण अधार धन्य ब्रज पावनभूमि सुहाईजी ॥
दूध दही माखन मही तहाँ माँगत दान कन्हाईजी ॥
धन्य ब्रज इकपलक को सुख औ त्रिभुवनमें नाईजी ॥
कहत सुर मुनि हर्षि पुनि पुनि सुमननझरी लगाईजी ॥ १ ॥

कान्ह गोपी ग्वाल एकही एकहि बहुत नधारीजी ॥
भक्तजनन हित विरद जासुको लीला बहु विस्तारीजी ॥
नित्य निगमागम कहत है ब्रजविलास शुभकारीजी ॥
विहारन सदा यह यशगावै कर आनँद मनभारीजी ॥ २ ॥
दोहा—दान चरित गोपालको, अति विचित्र रसखान ॥
वेद भेद पावे नहीं, कवि किमि सके बखान ॥
चौबो०—कवि किमि सकै बखान दान कोउ सुजनसुनें अरुगावेजी
प्रेम भक्ति वरदान हरी सो विहारन सोई पावेजी ॥
ब्रजललना यों हरिय सुनावे दधि माखन हम ल्यावेजी ॥
मटुकिनते लै लै हम देहीं खाहु हमहुँ सुख पावेजी ॥ १ ॥
गोरस बहुत हमारे घर घर लीजे दान कन्हाईजी ॥
यह जो दान आजको पायो सो तुम लीनो खाईजी ॥
लेहु सबै अपनो कर लेखो फेर न पैहो राईजी ॥
श्याम कह्यो अब भई हमारी लै हैं जब मन चाईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्रीति भई हम तुमनसों, मांगिलेहिं जबचाय ॥
बाट घाट कछु डरनहीं, निधरक बेचहु जाय ॥
चौबोला—निधरक बेचहु जाय ग्वालनी भई श्याम बशमाईजी ॥
घरको जात बनत है नाईं चकित भई समुदाईजी ॥
कहति एकसों एक विचारी कहा कियो कुँवर कन्हाईजी ॥
दान लियोकै मन हर लीनो यह तो बदी हम नाईंजी ॥ १ ॥
बूझनको उमँगी सबबाला मोहन सों यह बातेजी ॥
निकट जात रहिजात सकुचि मन बहुरि मगन ह्वै जातेजी ॥
कहिये कैसे श्याम सों जाई मनहीं मन सकुचातेजी ॥
प्रेम विवस तरुणी सब ठाढ़ी करत बात नहिं आतेजी ॥ २ ॥
दोहा—ढीठो बहुत कियो हमहिं, सुनहु श्याम सुखरास ॥

क्षमा करो सो चूक अब, हम सब तुम्हरी दास ॥
चौबोला-हम सब तुम्हरी दास खिजावत हम तुमको हितजानीजी
सो कछु तुम उरमें जिन आनो कही कटुक हम बानीजी ॥
कछु रिस हमरे उरमें नाहीं अति आनंद रहिमानीजी ॥
दधिको दान और जो जानो सब तुम्हरो सुखदानीजी ॥ १ ॥
अहो श्याम तुम यह कहा कीनो मन हमरो हरिलीनोजी ॥
हम तुम सों कछु भेद न राख्यो तुम जो कह्यो सोइकीनोजी ॥
यह करनी तुमहीं अब जानो भली बुरी सब चीनोजी ॥
हम तुमसों अंतर नहिं राख्यो सरबस तुमको दीनोजी ॥ २ ॥
दोहा-अंतर्यामी हो हरिः, वेद भरत सब साखि ॥
सुनहु बात युवती सबै, तुमहित घेरी राखि ॥
चौबोला-तुमहित घेरी राखि तुमहिंते दूर नहोत सदाईजी ॥
रहत तुम्हारे निकट सदा मैं तजत एक क्षण नाईजी ॥
तुम कारण वैकुंठ तजो मैं प्रगट्यो हों ब्रज आईजी ॥
वृंदावन तुम्हरो मिलन सो यह न विसारचो जाईजी ॥ १ ॥
एक प्राण द्वै देह जानियो यामें अंतर नाईजी ॥
यह न नयो अब नेह कछू तुम भूलतकत ब्रज आईजी ॥
अब घर जाहु दान मैं पायो करलेखो निबटाईजी ॥
हँसि हँसि यह भाषत बनवारी कहत भई समुदाईजी ॥ २ ॥
दोहा-तन मन विन किमि जाइँघर, कहत कहा ब्रजराज ॥
सब तन पर मनहीं बसत, जो कछु करै सो काज ॥
चौ०-जो कछु करै सो काज सोतोमन निकट आपराखिलीनाजी॥
घरको जान कवन बिधि होई अहो श्याम कहा कीनाजी ॥
चलत नहीं पग नैन विहीना इन्द्री मन आधीनाजी ॥
जोतुम प्रीति करी मनमोहन तो दुबिधा क्यों दीनाजी ॥ १ ॥

यहतो तुम जानत ब्रजनाथा मन बिन घर किमि जाईजी ॥
मन भीतरमें बास बनायो राखाति मोहिं तहांईजी ॥
तजहु अजहुँ मैं जाउँ दोष यह तुमरो मेरो नाईजी ॥
लेहु आपनो मन घर जाऊं लोक लाज तुम्हें आईजी ॥ २ ॥
दोहा—जाते घटती होय निज, तज दीजै सो बात ॥
दीनो मनमें बास तब, अब मन क्यों पछितात ॥
चौ०-अब मन क्यों पछितात तुमहिं यह जो मन दीनों मोईजी॥
तोमैं ह्वै जैहों अब न्यारो जो लेहो मन सोईजी ॥
सदा हमारे मनमें बसिये क्षण न्यारे जिन होईजी ॥
तुमहिं बिना धृक मन अरु धृक घर धृक कुल लज्जा जोईजी॥१॥
धृक तुम प्रेम बिना पितु माता धृक सुत पति व्यवहाराजी ॥
धृक जीवन तुम बिन संसारा तुम बिन धृक सुख साराजी ॥
धृक रसना तुम गुण नाहिं गावै धृक दृग तुमन निहाराजी ॥
धृक श्रुति तुम्हरी कथा नभावै धृक मन तुमन विचाराजी॥२॥
दोहा—धृक श्वासा तुम बिन वहै, निशि दिन तुमबिनजाहि॥
तन मन धन तुम बिनवृथा,सबधृक जहँ तुमनाहि ॥
चौबोला—सबधृकजहँ तुमनाहिं कबहुँसब घरहिजानमनधारेजी॥
कबहुँक हरिकी ओर निहारे हरि पर तन मन वारेजी ॥
दधि भाजनले शिर पर धारे कबहुँकभूमि उतारेजी ॥
रीती मटुकिन में कछु नाहीं यह मनमाहिं विचारेजी ॥ १ ॥
बिहँसिकह्यो तब कुँवरकन्हाई अब तुम सब घर जाईजी ॥
सकुचत पीछे दानहिं को तुम मैं सब लेहुँ निभाईजी ॥
सखन सहित हरि बनहिं सिधारे ऐसे वचन सुनाईजी ॥
युवतिन दान मनाय सबनको लेगये चित्त चुराईजी ॥ २ ॥

इति पूर्वार्द्ध समाप्त।

श्रीः ।

ब्रजचरित्र ।

उत्तरार्द्ध प्रारंभः ।

अथ गोपिनके प्रेमकी उन्मत्त अवस्था लीला ॥

दोहा—रीती मटुकी शिरधरी, चलीं सकल ब्रजबाम ॥
एक एककी सुधि नहीं, नहीं सुरत धन धाम ॥

चौबोला—नहीं सुरत धन धाम जड अरु चेतन जानति नाईजी
बन गृह कछू विचार न जानें फिरति बनहिंके माईजी ॥
आप सहित भूलीं सब कोऊ कुल मर्याद भुलाईजी ॥
बेचत दही बनहिंमें डोलें लेहु दधिक हम जाईजी ॥ १ ॥
कहत द्रुमन बोलत क्यों नाई लेहो दधिके जाईजी ॥
तरु तरु सों पूँछत यहि भांती फिरत प्रेमरस छाईजी ॥
मिलत परस्पर बिवस निहारी कहत बनहिं क्यों आईजी ॥
तिन्हें कहत अपनी सुधिनाई समुझति नाहिं मन माईजी ॥२॥

दोहा—भरीं प्रेमरस ब्रज वधू, तनुकी दशा बिसारि ॥
रीते भाजन धारि शिर, डोलति बनहिं मँझारि ॥

चौबोला-डोलति बनहिं मँझारि कबहुँ चलीं यमुनाके तटजाईजी
फिरत कबहुँ कुंजनके माई बंसीबटतन आईजी ॥
ठाढी है तहँ हरिहि बुलावैं आवहु कुँवर कन्हाईजी ॥
लीजे गोरस दान हरी अब कितधौं रहे हो छिपाईजी ॥ १ ॥
तुम्हरे डर हम जांत नहीं हैं तुम दधि लेत छिनाईजी ॥
लेवहु अपनो दान हरी अब पुनि उठिहो रिसहाईजी ॥
हमें न देहो जान घरहि अब सब ठाढी बनमाईजी ॥

बैठ गईं मटुकी धर सबही जानति घर ते आईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐहैं हरि सँग सखनले, चुकैहैं दधिको दान ॥
दधिहिदुरावति ओट करि, दीठ परी तबआन॥
चौबोला—दीठ परी तब आन रीतिही मटुकी सबन निहारीजी ॥
गईं भ्रमहिं उरमें सबनारी परी सोच वश भारीजी ॥
गोरस ढरकायो कहुँ आली जहँ तहँ बूझति ग्वारीजी ॥
कोऊ कहति कान्ह ढरकायो खायो तब बनवारीजी ॥ १ ॥
कबकी यहां आइ हम आली भई सुरत तनु माईजी ॥
सकुच गई कछु गुरुजन डरते प्रातहिते हम आईजी ॥
रही कहां तबते बन माई सुरत हमें कछु नाईजी ॥
जब हरि सखन संग दधिखायो गये वनहिं सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तबलोंकीतो सुधि हमें,पुनि कहाभईजो नाहिं ॥
डारि ठगोरी शशिहरि, गये श्याम वनमाहिं ॥
चौबोला—गये श्याम बनमाहिं दान दधिलीनोकुँवरकन्हाईजी ॥
तनु सुधि विसरगई तबहीते मृदु मुसकन मनभाईजी ॥
मन हरलीनो कुँवर कन्हाई उन विनरहो नजाईजी ॥
ऐसे कहि ब्रज वाम सकल मिल चलीं घरन समुदाईजी ॥ १ ॥
मन हरिसों तनु घरहि चलावै मत्त गयंद ज्यों जावैजी ॥
श्याम रूपरस मदसोइ भारो महावत कानि मिटावैजी ॥
कर्म नेह बंधन सोइ तोरयो मुरे न कुंजमुरावैजी ॥
गुरुजन उर अंकम सुधि आवै तब घर पगहि चलावैजी ॥ २ ॥
दोहा—गईं सदन ब्रज वाम सब, हरि बिन नाहिं सुहाय ॥
बूझत गुरुजन बात तब, औरहि और बताय ॥
चौबोला—औरहि और बताय लरत सब देगारी समुझावैजी ॥
श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ और न बात सुहावैजी ॥

मात पिता बहु त्रास दिखावै नेक न मनमें ल्यावैजी ॥
बार बार जननी समुझावै काहे हमहिं लजावैजी ॥ १ ॥
जित तित तुम काहेको डोलो क्यों कुलकानि मिटाईजी ॥
दधि बेचो सूधे घर आवो काहे विलम लगाईजी ॥
बूझे ज्वाब देतहो नाई बसी कहा मन माईजी ॥
ऐसे सिखवत मात पितासों कराति कानि कछु नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—लागत हैं तिनके वचन, उरमें बाण समान ॥
धृक धृक इनकी बुद्धिको, तिन्हैं कहति मन जान ॥

चौबोला--तिन्हैं कहति मन जान इनहिंको हरिकी प्रीतिनभावैजी
जाहि प्रिये नहिं कुँवर कन्हाई सो मुख विधि न दिखावैजी ॥
गुरुजनको निदरति मन माई विधि सों विनय सुनावैजी ॥
विसरत श्याम न सोवत जागत नेक न मन घरलावैजी ॥ १ ॥
नैन श्याम दरशन रस अटके श्रवण शब्द रस छावैजी ॥
रसना श्याम विना नहिं बोलै मन चंचल सँग जावैजी ॥
नासा अंग सुगंध लुभानी सुरति सो रूप समावैजी ॥
जितहि श्याम सुन्दर सुखरासी तितहि चलन पगचावैजी ॥२॥

दोहा—लोकलाज कुलकानितजि, रँगी श्याम रँग माहिं ॥
प्रातचलीं ब्रज लै दधिहिं, इन्द्री मन वशनाहिं ॥

चौबोला—इन्द्री मन वशनाहिं गोरस लै चलीं सकल ब्रज बालेजी
रसनामें अटक्यो हरि को यश धर उर ध्यान विशालेजी ॥
दधिको नाम भूल गईंबाला कहति लेहु गोपालेजी ॥
व्याप गई उरमाहिं दशोदिश भीजीरस नँदलालेजी ॥ १ ॥
फँसीतीय खग वृंदाहि ज्यों सब हरि छवि लटकन जारीजी ॥
तरफरात तामहिं परीं सब निकसि सकत नाहिं ग्वारीजी ॥

१ लज्जा। २ कान। ३ जिह्वा। ४ नाक। ५ पक्षी।

पान किये जिमि बारुणि तनमें बोलत मुख न सँभारीजी ॥
परत चरण डगमग जित तितही विथुरीं अलक लिलारीजी॥२॥
दोहा—अलबल बोलति बदन ते, दधि बेचति ब्रजजाय ॥
गोरस लेन बुलावहीं, सुनत नहीं कोउताय ॥
चौ०-सुनत नहीं कोउ ताय कबहुँ कछु चेत होत तिहिं कालाजी॥
गोरस लेत आज कोउ नाईं आज कहा यह हालाजी ॥
बोल उठत पुनि लेहु गुपालहि अटक्यो मन सोइ ख्यालाजी ॥
लेहु लेहु कोऊ बनमाली कहत फिरति यों बालाजी ॥ १ ॥
कोऊ कहत श्याम बनवारी कोउ कहत गिरिधारीजी ॥
कोऊ कहत दान कोउ लीनो तुमहीं कियो मुरारीजी ॥
देह गेहकी सुरत विसारी दधि मटुकी शिरधारीजी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई सो दधि नाम उचारीजी ॥ २ ॥
दोहा—इहि विधि दधि बेचति सबै, गइ बिनमोल विकाय ॥
हरि बिन और न भावही, कितनो कोउ समुझाय ॥
चौबोला-कितनो कोउ समुझाय दरश बिनभइँभोरीमतिवामाजी
अन्तरलगी सुरतकी डोरी विसर गई धन धामाजी ॥
प्रगट्यो पूरण नेह सबन उर जित देखें तित श्यामाजी ॥
समुझाई समुझत नाहीं सब सिख देथाक्यो ग्रामाजी ॥ १ ॥
कृष्ण प्रेमरसमद मतवारी मगन सकल ब्रजनारीजी ॥
कोऊ तिनमें नाहिं अदूरी प्रेम मगन मन सारीजी ॥
कहं लगि सबको प्रेम बखानू एक दशा सब ग्वारीजी ॥
तिनमें श्री वृषभानु दुलारी सकल शिरोमणि प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कहूँ कथा तिनकी अबै, रहि हरिसोंमन लाइ ॥
दधि भाजन माथे धरे, लेहु श्याम कहिजाइ ॥
चौबोला—लेहुश्यामकहिजाइ बुझतिकोउतिन्हैंऔरसखिआईजी

बेचत कहा फिरत तू ग्वारी सो हमें देहु बताईजी ॥
प्रातहिते लीने दधि डोले मुखते कहत कन्हाईजी ॥
कहा कहत यह हमें बतावो दे निज बात सुनाईजी ॥ १ ॥
उफनततक्र चुवत अँगमाई ताकी सुधि तोहिं नाईजी ॥
इतते उत उतते इतआई बुधि मर्याद मिटाईजी ॥
मैं जानी यह बात मनहिंमें तो मन हरचो कन्हाईजी ॥
तिन्हें कहति मोहिं भवन नंदको कहां सो देहु बताईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहां बसत वहु साँवरो, मोहन नंदकुमार ॥
कहूं अंत ब्रजही रहत, कि याही गांव मझार ॥

चौबोला—याही गांव मझार खोजति मैं जाको नामकन्हाईजी ॥
मोहिं देहु नँद सदन बताई बहुत दूरते आईजी ॥
नंदहिके द्वारेपर ठाढी बूझति भ्रमता छाईजी ॥
मन बँध गयो प्रेमकी फांसी कुलकी कानि मिटाईजी ॥ १ ॥
हरिकी प्यारीकी अति प्यारी एक सखी तहँ आईजी ॥
प्यारीको निज ढिग बैठारी कहति वचन समुझाईजी ॥
अहो राधिका कुँवरि सयानी क्यों ऐसी बउराईजी ॥
ऐसे प्रगट प्रेम नाहिं कीजै धीरज धरम नमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हँसिहैं लखि ब्रजलोग सब, दई डारितैं लाज ॥
मात पिता गुरुजनतंजे, भ्रमत फिराति किहि काज ॥

चौ०-भ्रमत फिराति किहि काज तोहि पायो धन प्रेम कन्हाईजी॥
रखिये गुप्त न प्रगट जनाई समुझ देखि मनमाईजी ॥
ऐसी तोय बूझिये नाई कहाति तोय समुझाईजी ॥
अजहूं चेति कहति मैं ताही बात तेरे हित चाईजी ॥ १ ॥
कृष्ण प्रेम धन तुम यह पायो प्रगट न कीजै प्यारीजी ॥
ज्यों फणि मणि दुबकात गोप त्यों राखिय उरमें धारीजी ॥

पायो नागर नेह लाडिली तू पति नागरि नारीजी ॥
तोकत देति उघारि सबै अब कहिहैं तोहिं गँवारीजी ॥ २ ॥
दोहा—जोमैं तोते कहतहों, तू सुनिहै कैनाहिं ॥
देहै ज्वाब कछू मोहीं; कै कछु कहिहै नाहिं ॥
चौबोला—कैकछु कैहै नाहिं वचन मुख मौनगहे रहजाईजी ॥
घर अपने जैहै कि नजैहै कहा बसी मन आईजी ॥
ब्रजमें प्रगटीहै यह बाता लोगन मुख सुन पाईजी ॥
मानेंगी मम वचन कि नाईं कै फिरिहै ब्रज माईजी ॥ १ ॥
जो ये प्रीति श्याम सों जोरी लाज किये नहिं जाईजी ॥
ध्यान श्यामको धर उर माई फिरति कहा भरमाईजी ॥
मुखतौ खोलि सुनहु मम वानी कछु तुम कहौ सुनाईजी ॥
कहा कहत मोसोंरी आली मोमन लियो कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जबते कछु न सुहावही, जित देखों तित श्याम ॥
अबलों नहिं जानति कछू, कहा कहति मोहिंबाम ॥
चौबोला-कहा कहति मोहिं बाम कहाँ गृह कौन पिता को माईजी
कहा दुर्जन को गुरुजन भ्राता सो कछु जानति नाईजी ॥
कहा लाज कहा कानि बड़ाई कहा कहति कित आईजी ॥
बार बार तू कहत कहारी मैं समुझति नहिं काईजी ॥ १ ॥
मन मेरो हरलीनो आली वा नँदके बनवारीजी ॥
रहत न मेरी आन देतहो कियो यत्न मैं भारीजी ॥
दोष बतावत मेरो तू यह कही न बात विचारीजी ॥
हाथ नहीं मन मेरो आली को सुने सीख तिहारीजी ॥ २ ॥
दोहा—सब इन्द्रिनको मन धनी, इन्द्री मनको अंग ॥
सो हरलीनो श्यामने, गइ इन्द्री मन संग ॥
चौबोला—गइ इन्द्री मन संग मेरे अब वशमें कोऊ नाईजी ॥

नहिं आवत इतकोय रहत वे हरिके पास सदाईजी॥
नैन दरशके लोभ लुभाने श्रवण शब्द रस माईजी॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे थकी मैं सबन मनाईजी॥ १॥
कौन करै घूंघट पट छाई मेरे कर वश नाईजी॥
अब तो प्रगट भई जगजानी मोहन हाथ विकाईजी॥
जग उपहास करो बहुतेरो अबतो मन यह आईजी॥
कै लघुता कै होउ बडाई बसे उर श्याम कन्हाईजी॥ २॥

दोहा–मेरो मन हरिसों मिल्यो, तज्यो सकल निजकाज॥
नाच कछो तब सुन सखी, कहा घूंघट पटलाज॥

चौबोला-कहा घूंघट पटलाज मेरे मन अब तो ऐसी आईजी॥
मिलिहौं हरिसों ज्यों पयपानी यह मेरे मन भाईजी॥
मेरो मन हरि संग बस्यो अब लोक लाज बिसराईजी॥
भो जहाजको काग ठोर कहुँ और न दीसत ताईजी॥ १॥
मौन गही पुनि नागरि तबहीं ऐसे सखिय सुनाईजी॥
मगन भई रस श्याम सुन्दरके देह दशा बिसराईजी॥
जाय परचो मन वाई ख्यालहि बोलति लेहु कन्हाईजी॥
कहति सखी सों कहां श्याम सो मोहिं बतावहु वाईजी॥ २॥

दोहा–वेग मिलावहु साँवरो, देवहु मोहिं बताइ॥
विरह विकल बाला अती, मन हर लियो कन्हाइ॥

चौबो०–मन हर लियो कन्हाइ शीशपर दधि मटुकी धरल्याईजी
द्वारे आय नन्दके डोले टेरति लेहु कन्हाईजी॥
इत उत जात तहीं फिर आवै लेहु श्याम दधि आईजी॥
चली बनहिं खोजत बनवारी विवस भई भ्रम पाईजी॥ १॥
तन मन हरिके अर्पण कीनों फिरत विकल बन प्यारीजी॥
कीनों दीपक प्रेम प्रकाशा लाज तिमर सब टारीजी॥

रोम रोम में रमे कन्हाई तनुकी दशा विसारीजी ॥
प्रेम अवधि ब्रजगोप कुमारी गावत वेद पुकारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र रसखान ॥
कहत सुनत भवं भय हरण, रसिक जननके प्रान ॥
चौबोला—रसिक जननके प्रान हरीसो रसिक शिरोमणिराईजी॥
रसलीला जो ब्रजमें कीनी कहों सो अब सुखदाईजी ॥
देखि दशा राधाकी ग्वाली शिक्षादेन जो आईजी ॥
चकित रही मनमाँझ विचारी श्याम ठगोरी लाईजी ॥ १ ॥
गई सखी सो हरिपैधाई कहति सुनो सुखदाईजी ॥
ढूंढत फिरत तुम्हें इक नारी रूपवंत अधिकाईजी ॥
पहिरे नीलांबर अति सोहै मुखछबि वरनि नजाईजी ॥
प्रातहिते लीने दधि डोलै कहति न लेहु कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—भ्रमत २ व्याकुल भई, वंसीवट तन जाइ ॥
मन वच क्रम वाको लग्यो, तुम में प्राणकन्हाइ ॥
चौबोला—तुम में प्राण कन्हाइ कबहुँ हरि ताहिमिलोसुखदाईजी
तुम विन विरह विकल अतिबाला मिलहूवेगं कन्हाईजी ॥
सुनत श्याम मन हरष बढायो साँची प्रीति लखाईजी ॥
हरि हँसि विदा सखीको कीनी आप दरश दियो जाईजी॥ १ ॥
मिले प्रेम हर्षित दोऊ तब राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
जनु तनु धर शृंगार विराजत कुंज सदन छवि छाईजी ॥
श्यामा अरु घनश्याम निरख छवि कोटि काम बलिजाईजी ॥
विहारन जन उर वसो कृपा करि युगल किसोर सदाईजी ॥२॥
दोहा—सोहत कुंज कुटी हरी, जिमि दामिनं घनश्याम ॥
विरह ताप तनुको गयो, बोली हरिसों बाम ॥

१ देह। २ संसार। ३ शीघ्र। ४ बिजली।

चौबोला-बोली हरिसों बाम कहा कहों तुमसों कुँवर कन्हाईजी ॥
कही कछू नाहिं जात कहत मैं लजत मनहिंके माईजी ॥
होत चवाव सकल ब्रज माई सुनत सही नहिं जाईजी ॥
जादिन तुम गैया दुहिदीनी तब मैं हाहा खाईजी ॥ १ ॥
सहज गही वहियां तुम मेरी मैं हँसि सहज सुभावैजी ॥
करत चवाव सकल ब्रज वनिता गृह मारग जहां जावैजी ॥
राधा कृष्ण एकहैं दोऊ सबकोउ यहै सुनावैजी ॥
यह सुनि घर गुरुजन दुखपावै तब मोहिं त्रास दिखावैजी ॥२॥

दोहा-निकसत द्वारे जबहि तुम, तब सब रहत लुभाय ॥
मोहिं देखि निंदाति तुम्हें, सो मोहिं सही नजाय ॥

चौबोला-सोमोहिं सही न जाय धृक जन जिनको तुम प्रिय नाईजी
हितकर तुमको जानत नाहीं कहा भयो नेमनिभाईजी ॥
मैं लीनो दृढ़ नेम तिहारो सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
यहै पतिव्रत पारिहों मोहन तुम पद प्रीति सदाईजी ॥ १ ॥
वचन सुने नाहिं जात कन्हाई तुम बिन कासों कैयेजी ॥
ताते विनय करत मनमोहन वा पैंडे जिनऐयेजी ॥
जो आवो तो मोहिं न जनावो मुरली ध्वनि न सुनैयेजी ॥
मुरली ध्वनि सुनि सुनहु कन्हाई मोते रह्यो न जैयेजी ॥ २ ॥

दोहा-प्रेमाकुल सुनि प्रिय वचन, हँसि बोले बनवारि ॥
तुम मोते न्यारी नहीं, सांच कहत ब्रजनारि ॥

चौबोला-सांच कहत ब्रजनारि कहो किन वे नहिं जानत काईजी
बात नहीं पहिंचानत अपनी उन सब सुरत भुलाईजी ॥
प्रकृती पुरुष उभय लीला हित हम यह देह बनाईजी ॥
भेद न घट पानी तुम हमते नेकहु न्यारीनाईजी ॥ १ ॥
जल थल जहां तहां तनु धारों तजत तुम्हें नहिं न्यारीजी ॥

तुम तजि रहत नहीं कहुँ न्यारो सुनहू भानदुलारीजी ॥
देह धरेको यही विचारा रखिये कुल व्यवहारीजी ॥
मात पिता गुरुजन डर कीजे लोकलाज रहौ धारीजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रीति पुरातन जानि उर, जाहु प्रिया अब धाम ॥
प्रगट न कीजे बात यह, कहत बिहँसिकै श्याम ॥
चौ०-कहत बिहँसिकै श्याम मगन भई सुनत श्यामकी बानीजी॥
भयो हियेमें चैन जियेमें प्रीति पुरातन जानीजी ॥
तब जान्यो हरि पति मैं नारी अति आनँद मन मानीजी ॥
हरिकी महिमा जानि कहति मन पूरब बात भुलानीजी ॥ १ ॥
युग युग प्रभु लीला विस्तारी जानलई मन माईजी ॥
हरि तन चितै अल्प मुसकाई आनँद उर न समाईजी ॥
कहति सुनहु प्रिय अंतर्यामी हो तुम जगके साईजी ॥
मात पिता गुरु जन हितु भाई कहा इन नाथ सिराईजी ॥ २॥
दोहा–जो करता औरै सुनो, तो पतियाऊं ताय ॥
अरु ये प्रीतहि जगतकी, सोमोमन नहिं भाय ॥
चौबोला–सो मो मन नहिं भाय कैसे हरि औरन सों मन लाईजी॥
जो जाको सो ताको जाने और न मोहिं सुहाईजी ॥
यह सुनि हरिप्यारी उर लाई बहु विधि कर समुझाईजी ॥
तनु धरि लोक वेद विधि कीजै प्रीति करो मनचाईजी ॥ १ ॥
कहत श्याम प्यारी घर जावो तुमको भई अवारीजी ॥
प्रीति पुरातन राखि हृदय तुम करिये जग व्यवहारीजी ॥
परम प्रेम उर लाय लाडिली घर पठई हरि प्यारीजी ॥
फिर फिर चितवत जात श्याम तन चली घरहि सुकुमारीजी२
दोहा–चली किशोरी लूट सुख, गजगति चलन सुहाय ॥
रहे रीझ हरि निरखि छबि, प्यारी तन मनलाय ॥

चौबोला–प्यारी तन मन लाय रहे हरि प्यारी मनहिं सिहँवैजी॥
सुख भर चली लूट सी पाई कहति मनहिं कछु जावैजी॥
प्रगट न करों सखिनसों यह धन यह विचार ठहरावैजी॥
कृष्ण प्रेम धन गुप्त दुराऊं यों मन माहिं उपावैजी॥ १॥
श्याम कह्यो सोई चित धरिहौं प्रीति न प्रगट जनाईजी॥
ऐसे मनहिं विचारत जावै तहां सखी इक आईजी॥
अंग अंग छबि लखि मुसकाई प्यारी कहत सुनाईजी॥
कहा फूलीसी आवति राधा आज रूप अधिकाईजी॥ २॥

दोहा–कहति कछू तुम मनहिं मन, भौंह मरोरति आइ॥
सफल मनोरथ तैं कियो, हरिके सँग बनजाइ॥

चौबोला–हरिके सँग बनजाइ किये अंग रंगभीने दरशाईजी॥
हमसों सो सब बात उघारो दुरत न गंध चुराईजी॥
फिरत हुती व्याकुल तू अबहीं हरि दरशन कहां पाईजी॥
धनि धनि तेरो भागरी आली कहां मिले सुखदाईजी॥ १॥
योगी जन जप तप करि ध्यावैं नाहिं पावतहैं जाईजी॥
तैं कैसे करि लाडिलि प्यारी वशकरि पायोताईजी॥
कहा कहति सखि भई बावरी यह कहा बात सुनाईजी॥
तू हँसि कहति सुने जो कोई ताको सांच लखाईजी॥ २॥

दोहा–चकित होत अचरज सुनत, कहा कहति तू मोय॥
गुरुजनमें कैसे निभैं, तैं जो कही सो होय॥

चौबोला–तैं जो कही सोहोय कबहुँ कछु तुमते बात दुराईजी॥
मैं दुराव करिहौं सखि तोते यह तेरे मनभाईजी॥
को नँदनन्द कहत तू जाको मैं नाहिं देख्यो ताईजी॥
कै गोरो कै बरण साँवरो रहत कहा ब्रज माईजी॥ १॥

१ सकुच। २ छिपा। ३ दुःखित।

जाहु चली जानाति मैं तोको कहा भुरावत आईजी॥
अबहीं फिरत हुती बौराई आजहिं पढ़ि चतुराईजी॥
याही ब्रज हम तुम अरु वोऊ जानत दूर कहाईजी॥
परिहो कबहूं फंद हमारे करिहैं जुहार बनाईजी॥ २॥
दोहा–निपुण भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय॥
आवतहै बन कुंजते, बातें कहत बनाय॥
चौबोला–बातें कहत बनाय रीझे हरि दीसत अंग पुलकानीजी॥
सगबगीसी ह्वै रही कहा है मोसों करत सयानीजी॥
हँसत कहति कैधौं सतबानी यह कछु मैं नाहिं जानीजी॥
तोहिं सोंह मेरी जो दुरावै बहुरि कहौ सोइ बानीजी॥ १॥
तैं देख्यो कै किनहुँ सुनाई भाव कछू लखपाईजी॥
ऐसी कहति और जो कोऊ सुनती उत्तर आईजी॥
बूझति मोहिं लगावत ताई सपनहुँ देख्यो नाईजी॥
ऐसी मोहिं कहो जिन कोऊ झूंठी सहिय न जाईजी॥ २॥
दोहा–बहुरि न तोसों बोलहों, उचटावति मन आय॥
तोते औ मोहिंकौन प्रिय, कैहों हितकी ताय॥
चौबोला–कैहों हितकी ताय तोय यह मन परतीत नआईजी॥
मैं राखति तोते कछु गोई कबहूं बात दुराईजी॥
चतुर सखी मनमें यह जानी मोते नाहिं छिपाईजी॥
त्रास भई याके मनमाई ताते कहति यह नाईजी॥ १॥
तब यह कही हँसति मैं तोसों तू कत मन दुख पाईजी॥
मानी तेरी बात हमहुँ अब कहां वे कुँवर कन्हाईजी॥
वसत कौनधों गाम मँझारी हमहूं जानाति नाईजी॥
भई सयानी आज लाड़िली हम आगेकी जाईजी॥ २॥
दोहा–तैं नहिं हरि कबहूं लखे, हँसत कह्यो घर जाय॥

सकुच सहित तब लाडिली, गई घरहि समुहाय ॥
चौ०-गई घरहि समुहाय जननि तब कहति कहां हति प्यारीजी ॥
डोलति फिरति कहां तू जाई अजहुँ कहा तू बारीजी ॥
घर तोहिं तनक देखियत नाहीं फिरतह बनहिं मँझारीजी ॥
आज तोहिं धिरवतहों प्यारी श्याम संग जिन जारीजी ॥ १ ॥
सूधे मारग जात नहीं किन क्यों उपहास करावैजी ॥
वृथा करत मैया रिस मोसों को यह बात चलावैजी ॥
ऐसीको जो गढी विधाता श्याम संग सो जावैजी ॥
कौने बात कही यह तोसों मुहिं किन नाम बतावैजी ॥ २ ॥
दोहा-धन्य भ्रात धनि मात पित, ऐसी बात लगाय ॥
मैं बरजति मानत नहीं, तू परघर किम जाय ॥
चौ०-तू परघर किम जाय श्याम अरु श्यामा सब ब्रजमाईजी ॥
ह्वैरहे लाज लगत तोहिं नाहीं कहा बसी मन आईजी ॥
बड़े महरकी सुता कहावति क्यों पितु मात लजाईजी ॥
कहा कहतरी माय मोहिं अब खेलन जैहों नाईजी ॥ १ ॥
यहै अनोखी बातरि माता मोपै सहिय न जाईजी ॥
सब गोपनकी सकल लरिकनी घर घर खेलत नाईजी ॥
तिनके मात पिता कहा नाई तू मोपर रिसहाईजी ॥
अबहींतो मेरीहै बारी कहति मात मनमाईजी ॥ २ ॥
दाहो-कहाभयो तनु बाढि गयो, गई नहीं लरकाइ ॥
कहतहैं श्यामा श्याम सब, झूँठहि बात उड़ाइ ॥
चौबोला-झूँठहि बात उड़ाइ खेलतही देखि कहत बिन जानीजी॥
अबहींतो बालकहैं दोऊ यों कीरति मन आनीजी ॥
सुनत सुता मुख रिसकी बानी मनहीं मन मुसकानीजी ॥
परबोधति उरसों रिस टारी लावति उर हित मानीजी ॥ १ ॥

खेलनको मैं बरजति नाईं खेलहु गाम मझारीजी ॥
श्याम संग सुनि होत दुखारी लोग लगावत गारीजी ॥
जाते कुलको दूषण होई सो नाहिं कीजै प्यारीजी ॥
अब राधा तू भई सयानी दूर कहूं जिन जारीजी ॥ २ ॥

दोहा–जननीके मुख वचन सुनि, श्रीवृषभानु कुमारि ॥
मनहीं विनवत श्यामको, सुनहू कृष्ण मुरारि ॥

चौबोला–सुनहू कृष्ण मुरारि मात पितु मानत यह मन माईजी॥
जगत् ईश भगवान आपको ये कोउ जानत नाईजी ॥
लेत तुम्हारो नाम तबहिं मैं रहत मनहिं सकुचाईजी ॥
तुम विमुखन में क्यों रैहौं अब यहै समुझि पछिताईजी ॥१॥
क्यों विषखाय सुधा जिन चाख्यो को कुलकानि रखाईजी ॥
जिन्हैं नाथ तुम पद दृढ प्रेमा सो किमि नेम निभाईजी ॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी तुमरे हाथ विकाईजी ॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी जननिय कहत सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा कहतरी मोहिं अब, अकथ बात यह माय ॥
अब हरि संग न खेलि हों, जा कारण रिसहाय ॥

चौबोला–जा कारण रिसहाइ अरी अब हरि संग जैहों नाईजी ॥
आवन दे बाबाघर माई कैहौं यह उन पाईजी ॥
देति गारि मोहिं श्याम लगाई ऐसे भये कन्हाईजी ॥
काल्ह सखिन सँग जात चली मैं मिले गलीके माईजी ॥ १ ॥
लागे कहन बँसुरिया मेरी तू लेगई चुराईजी ॥
छठि आठे मोसों है जिनसों मोहिं लगावति ताईजी ॥
सुनि सुनि कर राधाकी बानी जननी मन मुसकाईजी ॥
कहति मनहिं मन यह अबहींलों लरिकाई गई नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाइ ॥

काпै जाय मनाइ पुनि, अब जैहै मचलाइ ॥
चौबोला–अब जैहै मचलाइ जानि जिय हारि मान रहिमाईजी
बोलि लई हँसिकै दुलराई कहि मेरी रिसहाईजी ॥
रही चकित सोभालखिचितसों हित करि कंठ लगाईजी ॥
परमचतुर वृषभानु दुलारी या विधि कारि चतुराईजी ॥ १ ॥
राखि लई चतुराइ मातको बातनहीं भरमाईजी ॥
कृष्ण प्रेम धन पाय छिपायो सखियन ते न जनाईजी ॥
जैसे कृपण महाधन पावे राखत गुप्त दुराईजी ॥
सखी मिली जो मारगमें जिन कह्यो सखिनसों जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनहु सखी राधा चरित, करी आज उनघात ॥
वृन्दावन ते आवती, अति मनमें हरषात ॥
चौबोला–अति मनमें हरषात औरही भाव अंग छबि छाईजी ॥
श्यामहिं मिली भई मन भाई सो उन बात दुराईजी ॥
मोको देखतही हँसि दीनी मैंहूं तब मुसकाईजी ॥
जब मैं कही मिले हारि तोसों तब मोपर रिसहाईजी ॥ १ ॥
मोसों कहन लगी तब प्यारी नाम कौनको श्यामैजी ॥
है गोरो कै वरण साँवरो वसत कौनसे ग्रामैजी ॥
मैं तो जानाति नाहिं सखी तू लेत कौनको नामैजी ॥
लखे नहीं कबहूं सपनेमें हँसी करत कहा वामैजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे टेढी भौंह करि, चितई नैन चढ़ाइ ॥
और कहो तो लरतिरी, वह डरपति नहिं काइ ॥
चौबो०-वह डरपति नाहिं काइ तबहि मैं यह कहि घरहि पठाईजी
मैं झूंठी तू सांचि भईरी जिन प्यारी रिसहाईजी ॥
दोऊ एक भये अब जाई हम ते बात दुराईजी ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै तहँ कहा बुद्धि उपाईजी ॥ १ ॥

सुनकै बात सखी मुसकाई देखनको अतुराईजी ॥
कहति सबै जबहीं हम जैहैं देहैं प्रगट जनाईजी ॥
दूध दूध पानी सों पानी रहत न बात छिपाईजी ॥
कैसे हमसों बात छिपैहै देखतही लज जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अपनो भेद न कहैगी, सुनिहो तहँ सब बाम ॥
चलहु लखहु वाके चरित, राधा जाको नाम ॥

चौबोला—राधा जाको नाम मैं बूझी करिकै बहु चतुराईजी ॥
नेकहु थाह न वाकी पाई उन नाहिं बात जनाईजी ॥
बड़े गुरूकी बुद्धि पढ़ी उन वह काऊ न पत्याईजी ॥
एको बात न मनिहै कबहूं सो सो सोगँद खाईजी ॥ १ ॥
सुनत वचन वाके वदनहि ते रहिहो सब पछिताईजी ॥
बातन बैर बढाय हो आली अब जैहैं रिसहाईजी ॥
कहा बैर हमसों वह करिहै देहैं सांच सुनाईजी ॥
औरन सों जो करति नटाई तो जानाति चतुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—जानी वाकी बात सब, हम ते रही चुराइ ॥
परिहै हमरे फंद जब, दूर करैं लँगराइ ॥

चौबोला—दूर करैं लँगराइ आज वह हमते भेद न कैहैजी ॥
तो पुनि कैसेकै निभहैगी बैर किये कहा पैहैजी ॥
है निधरक कैधौं डर वाको घरहि देखि चलि ऐहैजी ॥
बूझे बात कहाधौ कैहै मिलिहै कै दुर जैहैजी ॥ १ ॥
रिस करिहै कैधों हँसि बोलै कहै कि बात दुराईजी ॥
यह कहि चली सकल मिल आली सहज किधौं गरबाईजी ॥
गईनिकटं राधाके जबहीं प्यारी आत लखाईजी ॥
ये सब मोपर रिस करआई तब इक बुद्धि उपाईजी ॥ २ ॥

१ जाहिर । २ देखहु । ३ पास ।

दोहा—काऊको कीनो नहीं, आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही बोलत नहीं, बैठरही निहुराइ ॥
चौबोला—बैठ रही निहुराइ सखी तब बैठी सब ढिंग जाईजी ॥
कहन लगीं तब सब आपुसमें औरहि बात चलाईजी ॥
राधा चतुर चतुर सब आली चतुर चतुर मिलि आईजी ॥
उनतो गही मौन निहुराई इन लखिलई चतुराईजी ॥ १ ॥
मूंहां चूहीं करन लगीं तब सब मिल आपुस माईजी ॥
कहा आज इन मोन लयोरी बूझहु तुम कोउ याईजी ॥
अहो मौन व्रत किन सिखरायो बूझति सखि मुसकाईजी ॥
धनि वह गुरू मंत्र जिनदीनों जिन यह बुद्धि सिखाईजी ॥ २ ॥
दोहा—काल्हि और परभातही, भई और तत्काल ॥
सुनि धाईं हम सकल मिल, चकित भईलखिहाल ॥
चौबोला—चकित भई लखि हाल मौनको कहा फलदेहुबताईजी
मंत्र लियो तब हम न बुलाई हम सँग भइतरुणाईजी ॥
अब तुमहींको करैं गुरू हम द्यो उपदेश सुनाईजी ॥
करैं तुम्हें आदेश सकल मिल हमहूं मौन रखाईजी ॥ १ ॥
भई चतुर राधा तू प्यारी हमको करी अयानीजी ॥
लगी करन ऐसी विधि प्यारी अबतो भई तू ज्ञानीजी ॥
रहत एक संग हम तू प्यारी आजहि भई बिरानीजी ॥
कहा भयो तोहिं किन सिखरायो नईरीत कहा आनीजी ॥ २ ॥
दोहा—और कहैं तासों लरैं, हम कहिहैं हितकेरि ॥
सुनतकुमरि सखियन वचन, हँसीकरतये मेरि ॥
चौबोला—हँसी करत ये मेरि निठुर ह्वै बोली सब तन हेरीजी ॥
तुम प्रीतम के वैरन मेरी कहो सखी तुम येरीजी ॥
कही नहीं उन मोहिं भली यह और दशा भइ तेरीजी ॥

मैंरहि चकित सुनत ये बानी कह्यो तुम युगलमिलेरीजी॥ १ ॥
मेरे अंग छबि और बताई तब मैं बहुत दुखाईजी॥
जिनको मैं सपनें नाँहि जानूं तिनको नाम बताईजी॥
तुमहीं कहो सखी सब मोसों मैं कछु बात दुराईजी॥
कहां रहत मैं कहां कन्हाई करत चवाव लुगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—और कहै तो मोहिं कछु, नाहिं व्यापै मनमाहिं॥
तुमहिं कहो यह बात जो, तो दुख होय किनाहिं॥

चौबोला—तो दुख होय कि नाहिं जबहिमें कीनो आदरनाईजी॥
सुनि प्यारीकी बात सखी सब चितै रहीं मुसकाईजी॥
हमतो कह्यो तुम्हैं कछु नाईं कहति एक यो आईजी॥
ताहीपर होती रिसहाई जिन यह बात चलाईजी॥ १ ॥
तब ते हमसों नाहिं जनाई हमहूं लरती ताईजी॥
क्यों सखि प्यारिय दोष लगावे झूंठी बात बनाईजी॥
सपनेहूं यह जानति नाईं तू जो कहति कन्हाईजी॥
भेदाहि भेद कहत सब बातें देत सैन मुसकाईजी॥ २ ॥

दोहा—सबके मनकी जानि तब, प्यारी कह्यो सुनाय॥
कौन कौनको मुख गहों, कहो जाय जो भाय॥

चौबोला—कहो जाय जो भाय मनहिंते गढि गढि बात बनावैजी॥
झूंठीको सांची ठहरावै कत हम लाजन आवैजी॥
विना भीतहीं चित्र बनावै झूंठी सहिय न जावैजी॥
सुनि सुनि बोल सबनके मुखके मौन रहन मन चावैजी॥ १ ॥
वृथा झेर करत यह मोसों कहि कहि झूंठी बाताजी॥
भलो नहीं उपहास सखीरी मैं सकुचत दिन राताजी॥
भलो और याते सखि कहा है मिले श्यामसुखदाताजी॥
सुनियत हैं अभिराम नन्दको अति शुभ श्यामलगाताजी॥२॥

दोहा–जिनको नामहिं लेत यह, कैसे कुँवर कन्हाइ ॥
नयनन भर देखे नहीं, रहत सदा ब्रजमाइ ॥
चौबोला–रहत सदा ब्रजमाइ बात इक तुमसों कहत लजाईजी
इक दिन मोहिं दिखावहु उनको कैसे कुँवर कन्हाईजी ॥
देखोंधौं कैसे हैं तिनको तुम सब मोहिं लगाईजी ॥
सुनि वृषभानुसुताकी बानी सखी सबै मुसकाईजी ॥ १ ॥
सुनि प्यारी तू सीख हमारी कह न देहु कोउकाईजी ॥
तोको झूंठ कहे कहा पैहैं आपन पाप कमाईजी ॥
नेह सुगंधन दुरत दुराई यह नहिं रहत छिपाईजी ॥
ते काहेको लखे कन्हाई खरकनगाय दुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–राधाकी बानी सुनी, कहति सखी मुसकाइ ॥
रहत सदा ब्रज गाममें, इन नहिं लखे कन्हाइ ॥
चौबोला–इन नाहिं लखे कन्हाइ हमहिं जो सुनी रही सो नाईजी
ऐसेहि वायु वही ब्रजमाई झूंठहि बात उड़ाईजी ॥
सुनि प्यारी अब तोहिं दिखैहैं सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
जबहीं तोहिं बतैहैं आली तब ऐ हैं सुखदाईजी ॥ १ ॥
तब तू चीन्ह लीजियो उनको कहति लखे मैंनेहैंजी ॥
हैं कैसे कारे कै गोरे भोरे की अति चतुरेहैंजी ॥
तेरे हित बाँसुरी बजै हैं तोहिं देखि सुख पैहैंजी ॥
नाना भाव करैंगे जबहीं तबहीं तोहिं बतैहैंजी ॥ २ ॥
दोहा–तुमहुँ चतुर वेऊ चतुर, हर्षि कहति सब बाम ॥
चिरजीवहु जोरी सदा, राधा अरु घनश्याम ॥
चौबोला–राधा अरु घनश्याम फंदमें परिहो कबहूं आईजी ॥
तबहीं देहिं चिन्हाय कन्हाई दूरि करैं लँगराईजी ॥
सुनत व्यंग्य सखियनकी बानी प्यारी मन मुसकाईजी ॥

सखियन ते ऐसे हँसि भाषी राखिलई चतुराईजी ॥ १ ॥
जो तुम जियमें ऐसी जानी तो अब कहा बसाईजी ॥
मेरी बात प्रतीत नमानी सांच तुम्हें नहिं आईजी ॥
जो अब मोहिं श्याम सँग पावो तो कीजो मनभाईजी ॥
कान्हपीतपट बेसर मेरी लीजो तुरत छिनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी वदन निहारि ॥
आईही अति गर्वकरि, चलीं सखी घर हारि ॥

चौबोला–चलीं सखी घर हारि परस्पर आपुसमें बतरावैंजी ॥
परिहै कबहूं फंद हमारे तबहीं याय सुनावैंजी ॥
तीसहु दिन जो चोर चुरावै साहएक दिन पावैजी ॥
बोली एक सखी तिन माहीं इनको भेद न आवैजी ॥ १ ॥
दूर धरो मनते यह आली बैठ रहो घर जाईजी ॥
अति बरबोल गई कहा कीनो निठुर भई बतराईजी ॥
वहनहिं फंद तुम्हारे आवै वाके छंदन पाईजी ॥
वह सबहीमें बड़ी सयानी सीख लई चतुराईजी ॥ ॥ २ ॥

दोहा–अपर सखी बोली सुनो, लीक खैंच कहुँ तोय ॥
भेद कियो अब लाड़िली, हमहूँको रिस होय ॥

चौबोला–हमहूँको रिस होय हमें मन तबलगिधीर नहोईजी ॥
जब लगि चोर पकर नहिं पैहैं रहिहैं निशि दिन जोईजी ॥
श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ अब सखि हम सब कोईजी ॥
ताही दिन तिनको हम लरिहैं जा दिन मिलिहैं दोईजी ॥ १ ॥
सब ब्रज गोपिनके जुबती है बात यहै मन आनैजी ॥
हरि राधा दोउ रहत मिले अब निशि बासर यह ध्यानैजी ॥
सबहिनके मुख बात जहाँ तहँ और कछू नहिं जानैजी ॥
सुता महर वृषभानुकि राधा नन्दमहरको कान्हैजी ॥ २ ॥